दिगम्बरत्व के चितेरे

जीवन झाँकी दिग्दर्शन

भारत वसुन्धरा के हृदयस्थल में स्थित, बुन्देलखण्ड की तपोमाटी की गहराईयों में ढके, आत्मज्ञान के नीर से प्लावित, माँग में भरे सिन्दूर की समान सतपथ रूपी मार्ग से सिक्त, तन्मे मनः संकल्पमस्तु की भावना से परिपूर्ण यह चित्रांकन झाँकी ऐसे दिगम्बरत्व के कुशल चितेरे की ज्ञान व त्यागमयी साधना का अनवरत दिग्दर्शन है जिसने नियति की रंगशाला में उपसर्गों की प्रकीर्ण धूप को अपने व्यक्तित्व के वैराट्य में समाहित करके, उदात्त गुणों की अदीठ चिन्तन सरिता प्रवाहित कर जन मानस के हृदय में उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को पल्लवित व पुष्पित किया है। ऐसे कुण्डलपुर के अंचल को अपने में समेटे पथरिया ग्राम (जिला-दमोह मध्यप्रदेश) की धरा पर पिता श्री कपूरचन्द जी माता श्रीमती श्यामादेवी के गृहोद्यान में १९६३ वैशाख वदी ३, वि.सं. २०२० शुक्रवार के दिन चमकते रत्न के समान विरागी बालक का जन्म हुआ। किसे मालूम था आज का यह बालक भविष्य का विराग का सागर बनकर सबको हर्ष प्लावित करेगा। कमल के समान शोभा को प्राप्त अरविन्द नाम सार्थक करते हुए अपनी बाल-सुलभ चेष्टाओं से सबके मन को मोहित करते हुए यही बालक समस्त नाते-रिश्तों को पीछे छोड़, निर्ग्रन्थ पथ पर चलते हुए क्षुल्लक पूर्ण सागर बन जीवन की पूर्णता की ओर अपने कदम बढ़ाते हुए अरविन्द से आचार्य बन, उपसर्ग विजेता के रूप में प्रखर ज्ञानप्रदीप्त से शांतप्रिय महासंत बने। जिसे युग ने नव (उगते) सूरज की लालिमा के सदृश्य निस्पृहता, सौम्यता, सरलता, वात्सल्यता के कारण आचार्य श्री विरागसागर के रूप में जाना, पहचाना और गुणानुवाद किया। जो आज अपनी भेद-विज्ञान की कला और सद्आचरण से सिरमौर बन अपनी देशना से जन-जन के हृदय को आलोकित कर रहे हैं। आपकी ओजस्वी वाणी से प्रस्फुटित सम्यक्दर्शनादि कृतियाँ समाज की अमूल्य धरोहर हैं।

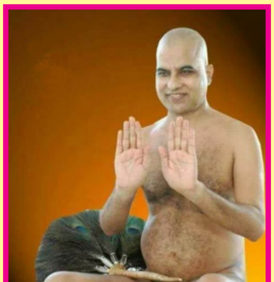

गणाचार्य विराग सागर जी

– श्रीमती माधुरी जैन ज्योति

जय जिनेन्द्र

अरे, सुबह-सुबह यहाँ चुपचाप बैठकर क्या सोच रही हो? कुछ बोलो भी तो...?
आज रात स्वप्न में देखा मैं शुद्ध वस्त्र पहनकर भगवान की पूजा कर रही हूँ.
पूजन करना तो अच्छी बात है. रुक क्यों गयी बताओ न और क्या देखा?
एक मुनिराज को हम दोनों निर्विघ्न आहार देते हैं और उन्हें मंदिर तक पहुँचाने जाते हैं.
सपना तो शुभ है.
इसका फल क्या होगा जी?
बस, यूँ समझ लो अपने आँगन में कोई पवित्र आत्मा जन्म लेने वाली है.
क्या आप सच कह रहे हैं.

भला मैं झूँठ क्यों बोलने लगा.
अब रहने भी दो..
अरी बहिना जल्दी आओ.
हाँ-हाँ अन्दर चलते हैं.
कपूर चंद, इतनी रात गये घर में शोरगुल कैसा?
नहीं बब्बा, सब कुछ ठीक है.
फिर ये चहलकदमी कैसी?
आज सन् 1963 शुक्रवार, बारह अप्रेल का दिन सेठ बाबू लाल के लिये बड़ा मंगलकारी है.
भैया भवो है बहू खाँ पथरिया गाँव के भाग्य जाग गये
ओह यह बात थी.
बधाई हो सेठ, बड़े भाग्यवान हो. पहले पोते की प्राप्ति हुई है.
भैया तुम मुस्कान छिपाकर क्यों बैठे हो?

इसकी तो खुशियाँ प्रकट करने का ढंग ही निराला है. सबका मुँह मीठा तो कराओ कपूर.
मुँह तो मीठा करेंगे ही. अब शीघ्र ही पोते के जन्म की खुशी में बड़ा आयोजन कराओ.
हाँ-हाँ क्यों नहीं. बालक की नानी की कामना के अनुकूल दस्टौन (चौक) का उत्सव करायेंगे.
तब तो बब्बा का घोड़ा भी सजाया जावेगा.

आओ-आओ शांती बहन.
बड़ी देर कर दी आने में.
आओगी क्यों नहीं बालक की नानी जो हो. पर मामा नजर नहीं आ रहे ?
उधर देखो, मामा पहले से ही काम में लगे हुए हैं.

और तो सब ठीक है पर नन्हें भइया की मौसी नहीं दिख रही हैं.
मौसी कब पीछे रहने वाली है. आप लोगों से पहले आकर खुशियाँ बटोर रही हूँ.
मालूम पड़ता है जल्दी आने का सारा श्रेय यही लेना चाहती हैं.
न बाबा न, भला आपकी बराबरी मैं कैसे कर सकती हूँ.
बहन, दस्टौन का कार्यक्रम जीजाजी बहुत ही शान से कर रहे हैं. क्या सजावट की है. घर के साथ झंडा चौक भी चमक उठा है.
अरी सुधा, अब गप्पें ही मारती रहोगी या कुछ करोगी-धरोगी भी.
आई माँ.
जा, बुआ शांती बाई के साथ नेग चार पूरे करवा.
जाती हूँ माँ.
“बाजे आनंद बधैया आज बहू के लालन भये”
शांती बाई तुम पहली बार बुआ बनी हो, इस खुशी के मौके पर बधाई तो सुनाओ.
पर एक शर्त है मेरी, अरविन्द की मौसी सुधा को नाचना पड़ेगा.
लो मैं तो कबसे तैयार बैठी हूँ.

"हुआ श्यामा भाभी के लाल, छबीली बाई नानी बनी"
वाह! क्या ताल बैठाया है बुआ जी ने.
शाँती बाई, तुम सब हँसती ही रहोगी या कार्यक्रम आगे भी बढ़ाओगी.
चलो, सब चौक समारोह के लिए लाई सामग्री देखते हैं.
बुआ इतना बड़ा पालना लाई है कि बच्चा के साथ-साथ जच्चा भी लेट जाये.
पथरिया के बाजार में देर रात तक वात्सल्य और आशीषों का प्रेम लुटता रहा. परिजनों के बीच दुलार की किलकारी भरता अरविन्द तीन वर्ष का हो गया. आज देखते-देखते अपने बब्बा के पास बैठा वह अचानक गायब हो गया.
अरे, बब्बा, इतनी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?
पता नहीं, अरविन्द कहाँ चला गया.
यहीं-कहीं होगा, वैसे आजकल बड़ा घुमक्कड़ हो गया है.
यदि इसका यही हाल रहा तो इसके हिस्से में घर या माँ नहीं साधुओं का विहार ही आयेगा.

अरे पिताजी, इतने नाराज क्यों हो रहे हो?
देखो कपूर, अपने लाडले को अभी से रोको. ज्यादा घूमने और बातें करने वाले बालक के संस्कार बाद में विहार और प्रवचन करने के बन जाते हैं
अब शांत हो जाओ बब्वा. वह तो दुकान पर भी हर किसी के साथ जाने को तैयार हो जाता है.
पिताजी, जरा सी बालक के बारे में आप कितने आगे की सोचने लगे.
ये जरा सी बात नहीं है. पूत के पैर पालने में ही नजर आने लगते हैं.
आप घर जाओ, मैं अभी उसे ढूँढकर लाता हूँ.
बब्वा, नादान है वह. अब लाल-पीला होना छोड़ो और घर चलो
जब यही नादानी किसी दिन सत्य घटना बनकर सामने आयेगी तब मालूम पड़ेगा कपूर को.
अरे तू रो क्यों रहा है.
हाय दइया, ये तो हाथ में बिच्छु पकड़े है.
इसे छोड़ दे बेटा, यह तुझे काट लेगा.
यह खिलौना नहीं है मेरे भैया!
तुम्हारे पकड़ने से इसे तकलीफ हो री है.
लो इसे फेंक दिया.

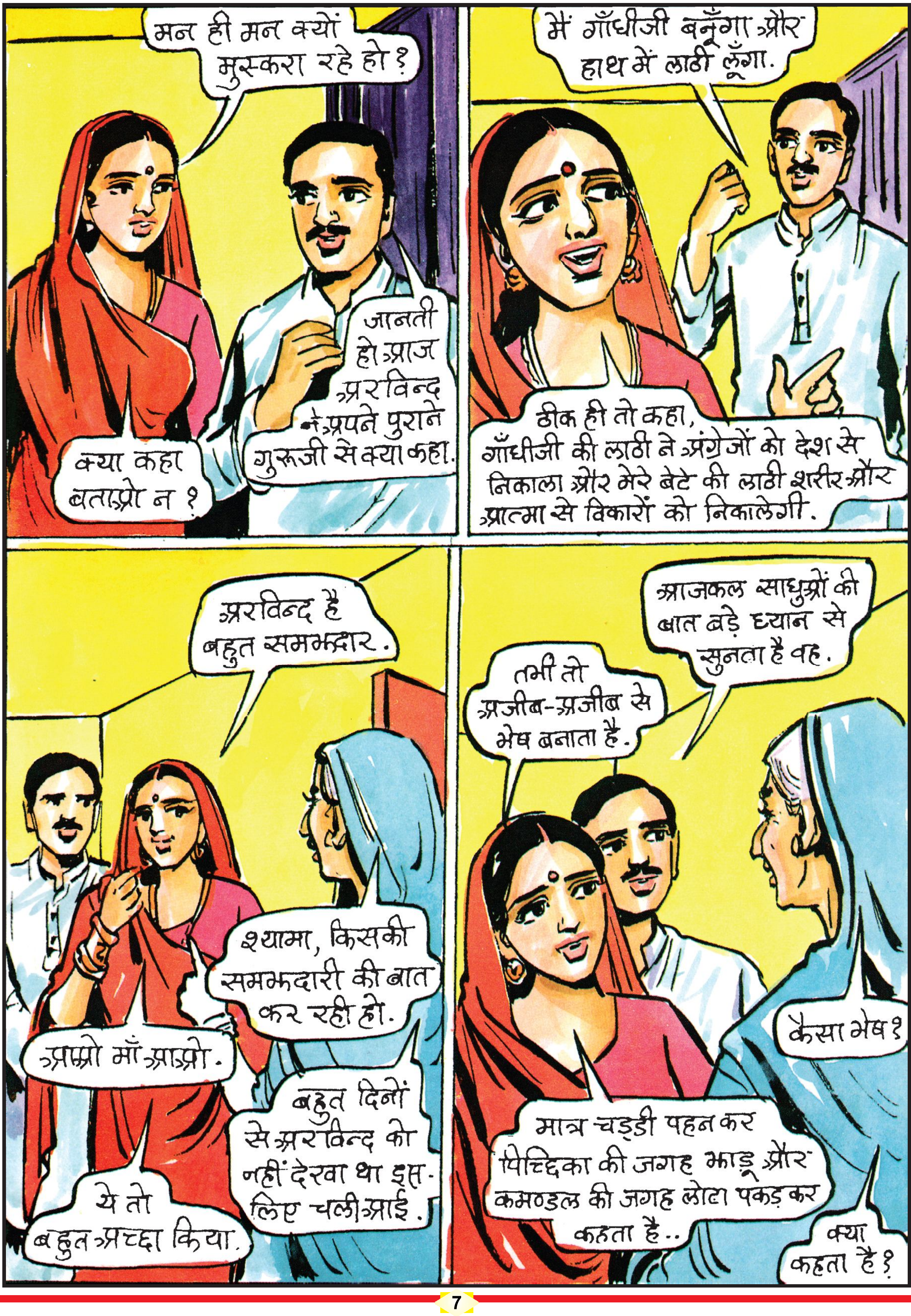

मन ही मन क्यों मुस्करा रहे हो?
जानती हो आज अरविन्द ने अपने पुराने गुरूजी से क्या कहा.
क्या कहा बताओ न?
मैं गाँधीजी बनूँगा और हाथ में लाठी लूँगा.
ठीक ही तो कहा, गाँधीजी की लाठी ने अंग्रेजों को देश से निकाला और मेरे बेटे की लाठी शरीर और आत्मा से विकारों को निकालेगी.
अरविन्द है बहुत समझदार.
श्यामा, किसकी समझदारी की बात कर रही हो.
आओ माँ आओ.
बहुत दिनों से अरविन्द को नहीं देखा था इसलिए चली आई.
ये तो बहुत अच्छा किया.
आजकल साधुओं की बात बड़े ध्यान से सुनता है वह.
तभी तो अजीब-अजीब से भेष बनाता है.
कैसा भेष?
मात्र चड्डी पहन कर पिच्छिका की जगह झाड़ू और कमण्डल की जगह लोटा पकड़ कर कहता है..
क्या कहता है?

मैं महाराज जी हूँ. पड़गाह लो माँ. महाराज जी आहार लेने आये हैं.
बच्चों को चोर-सिपाही का खेल तो खेलते देखा है..
पर यह महाराज जी का खेल खेलता है.
क्या पता, खेल-खेल का यह महाराज, सचमुच ही एक दिन महान तपस्वी न बन जाये.
मास्टर जी आप! आओ-आओ.
आपकी भावना अवश्य पूरी होगी.
अरविन्द के क्या हाल-चाल हैं.
कुछ पढ़ता-बढ़ता भी है या नहीं?
वह अन्य छात्रों से हटकर है. न किसी से लड़ता है न गाली गलौच करता है.
पढ़ाई में तो सबसे आगे है. अन्य सभी बच्चों को भी पढ़ाता रहता है.
बड़ा ही शान्त और सरल स्वभावी है. शाला में छात्रों के बीच झगड़ा समाप्त कर शीघ्र ही मित्रता करवा देता है.
यूँ तो बुजुर्ग और अग्रजों के प्रति विनय और सेवाभाव भी रखता है.
आपके मुँह से यह सब सुनकर मेरा तो मन प्रसन्न हो गया.

अब आगे की पढ़ाई की व्यवस्था करना आप लोगों का कार्य है.
मास्टर जसवन्त सिंह जी, इसका भी कोई उचित समाधान निकल आवेगा.
अच्छा, मैं चलता हूँ.
श्यामा, अरविन्द के बब्बा और पिताजी से इसकी चर्चा करना.
माँ, ये मिट्टी की मूर्तियाँ बनाकर आले में किसने रखी हैं.
अरविन्द के सिवाय और कौन रख सकता है. विजय देखो, कोई आया है.
माँ, बुआ जी आई हैं.
कैसी हो भाभी?
शांती जीजी आओ. बहुत दिनों में आना हुआ.
अरविन्द कहाँ है? पढ़ाई कैसी चल रही है?
उसकी पढ़ाई को ही लेकर तुम्हारे भैया चिन्तित हैं.
बहिन, पूरे ग्यारह वर्ष का हो गया है. कहाँ भेजूँ उसे पढ़ने?
इसमें सोचने की क्या बात है भइया.. कटनी में श्री शांति निकेतन जैन संस्कृत विद्यालय में प्रवेश दिला दो.

जीजी ठीक कह रही हैं. वहाँ पण्डित जगमोहन लाल शास्त्री जैसे महान विद्वानों का समागम प्राप्त होगा
ठीक है तुम्हारी और बहिन की बात मान लेता हूँ.
किसकी बात मान रहे हो पिताजी?
अपने जाने की तैयारी करो.
कहाँ पर
कटनी में पढ़ने के लिये.
पंडित जी, अरविन्द को अब आपको सौंपकर जा रहा हूँ.
चिन्ता मत करना. यहाँ सभी आपस में परिवार के समान रहते हैं.
अच्छा, अब मैं चलता हूँ.
जाओ अरविन्द, अपने साथी मित्रों से जाकर मिलो.

अरविन्द यहाँ आकर कैसा लग रहा है ?
अरे, ये तो रोने लगा.
अब कुछ बोलो भी न ?
मित्र, हम सब हैं न तुम्हारे साथ. क्यों खोये-खोये रहते हो.
बाबूजी और बाई की याद आ रही है. विजय जाने कैसा होगा ?
विजय को भी यहाँ पढनें बुला लेंगे.
पहली बार यहाँ आकर हम लोग भी ऐसे ही रोते थे.
धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा.
चलो, विद्यालय के अधीक्षक पं. धन्य कुमार जी के साथ गुरू पदम चंद जी कालीश लेने आ पहुँचे हैं.

माँ, आज घर में सभी लोग उदास क्यों हैं ?
बेटी, पर्यूषण पर्व के बाद आज के दिन अपने परिवार में छट की पूजा सभी मिल कर करते हैं.
इसीलिये तो आज अरविन्द और विजय की याद कर तुम्हारी माँ दुखी हो रही हैं.
अरविन्द और विजय का प्रवेश.
लो पिताजी, माँ को खुश करने हम दोनों आ गये.
अरे! अरविन्द और विजय तुम..
अब कुड़वा चमकने लगा और ये पकवान काम के लगने लगे, है न..
तू सच कह रही है मीना.

विजय तू अपने भाई के साथ कटनी में खुश तो है न?
हाँ, मैं भइया अरविन्द के साथ रहकर पढ़ने में अधिक सुख और संतुष्टि की अनुभूति कर रहा हूँ.
इसका मतलब है अरविन्द भइया तुम्हारा पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं.
अपने से भी अधिक,
माँ, मुझे शीघ्र लौटना है कटनी.
अच्छा बाबा, चले जाना. कौन रोक रहा है.
भैया पदमचंद जी, अरविन्द घर से वापिस आ गया?
दोनों ही भाई समय से आ गये हैं.
क्या हालचाल हैं अरविन्द के?
बड़ा ही होनहार, परिश्रमी अनुशासित छात्र है. करुणा और वात्सल्य की तो मूर्ति है.
हाँ, सेवाभाव तो उसकी रग-रग में समाया है.
तभी तो आचार्य श्री विद्यासागर की वैयावृत्ति कर उसने अपने श्रावक संस्कार को धन्य-धन्य कर लिया.

ज्ञात होता है उसे आचार्य श्री की बीमारी से जीवन के साफल्य का नया बोध प्राप्त हो गया है.
कितनी संयमित और व्रत नियम से परिपूर्ण जीवन चर्या बनाली है उसने.
छोटी सी उम्र में अष्टमी और चतुर्दशी का व्रत, सामायिक आदि कर अन्य छात्रों के लिये प्रेरणा का पाठ बन-कर सामने आया है.
बड़ा ही आत्म रूचिवंत है. सभी के प्रति समता भाव रखता है.
ठीक कहा, अनेकों कबूतरों, चिड़ियों, चूहों, कुत्तों, गाय आदि को णमोकार मंत्र सुनाकर सल्लेखना करायी है उसने.
यह सब करते हुए मात्र छह वर्ष में उसने पूर्व, प्रथमा, मध्यमा सभी परीक्षायें अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर ली है.
हाँ, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, तत्वार्थसूत्र, पुरूषार्थ सिद्धि उपाय, गोम्मटसार, जीवकाण्ड, सर्वार्थ सिद्धि आदि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है.
सुमति, कहाँ जा रहे हो? अरविन्द नजर नहीं आ रहा है.
यहाँ साधु-संतो का समागम मिल जाने से वह साधु ही बनने जा रहा है.
जब से आचार्य श्री सन्मति सागर जी यहाँ आये हैं तबसे तो वह और वैरागी होता जा रहा है.
ऐसा लगता है जैसे एक दिन देश के समस्त श्रावक उसकी शरण में आ जावेंगे राजकुमार..

तुम्हारे मुँह में घी शक्कर. भगवान करे ये शब्द सत्य हो जायें.
पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो मित्र ?
सत्य ही तो कह रहा हूँ.
छोड़ो इन बातों को. चलो अरविन्द के पास चलते हैं.
हम सब उसी की तो प्रतीक्षा कर रहे हैं.
करते रहो, वह यहाँ नहीं आने वाला..
क्यों ? कहाँ है वह.
मौनी बाबा बनकर भोजन कर रहा है.
चलो चलकर मौन तुड़वाते हैं.
नहीं मुन्नालाल, ऐसा मत करना, ये पापरूप परिणाम है.
पहले चलो भी तो.
कहो त्यागी जी क्या समाचार है.
मैं तुड़वाता हूँ इन त्यागी जी का मौन.
आ गया तुम्हारा पिच्छी-कमण्डल.

अब रहने भी दो मित्र, इस पर किसी भी बात का असर होने वाला नहीं है.
और प्रयत्न कर लो मुन्ना. पर इसकी श्रेष्ठ चर्या के आगे तुम्हें ही झुकना होगा.
ये सच कह रहे हो सुमति, ये अपनी धुन का पक्का और लगन का सच्चा है.
इसे कोई भी उपसर्ग सत्पथ के मार्ग से विचलित नहीं कर सकता है
तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो?
कुछ नहीं गुरूजी.
फिर आचार्य श्री सन्मति सागर जी की जयन्ती मनाने क्यों नहीं जाते.
चलो मित्रो, अब तो आचार्य श्री यहाँ (कटनी) से बिहार करने वाले हैं.
सुना तो ऐसा ही है.

सुमति बताओ प्रतिकूल परिस्थितियों में कौन चलायमान नहीं होता ?
गुरुजी, मालूम नहीं है.
मैं बताऊँ गुरुजी, निशंक और निर्भय ज्ञानी अपने मार्ग से चलायमान नहीं होते.
बहुत सुन्दर
कौन सी साधना आत्मा को परमात्मा बना देती है.
गुरुवर ! आत्म साधना ही आत्मा को परमात्मा बना देती है.
आत्मार्थी की सच्ची संपत्ति क्या है ?
ज्ञान और वैराग्य
अति उत्तम ! अरविन्द, तुम निश्चित ही एक दिन आत्मतेज के धारक बनकर जगत में सूर्य की भाँति चमकोगे.

आपका शुभाषीश पाकर मैं उपकृत हुआ हूँ गुरुजी.
अरे! यह जय-जयकार कैसी?
आचार्य श्री का इधर की ओर मंगल विहार हो रहा है.
मैं तो भूल ही गया चलो हम सभी चलते हैं.
आचार्य सन्मति सागर की जय हो.
अब तुम सभी यहाँ से लौट जाओ.
महाराज शाम तक आपके साथ चलेंगे.

चलो मित्रो, एक बार तो कटनी लौटना ही पड़ेगा. अपनी व्यवस्था कर, पुनः आ जायेंगे.
अरविन्द तुम मौन क्यों हो? चलो व्यवस्था बनाकर ....
माता-पिता भाई आदि से अनुमति लेकर आयेंगे.
किस व्यवस्था की बात कर रहे हो तुम लोग? गया समय लौटकर नहीं आता.
हठ मत करो अरविन्द..
नहीं, हम घर नहीं जायेंगे.
यह निश्चित है अब हम सब संघ मे ही रहेंगे. पर ....
पर क्या? अब हमें अपना पवित्र लक्ष्य सिद्ध कर लेना चाहिये.
एक बार तो घर जाकर अनुमति लेनी ही पड़ेगी?
आप सभी सानंद जायें, मैं घर पत्र जरूर लिख दूँगा.

सभी मित्रों का प्रस्थान
आचार्य श्री! अरविन्द का सेवाभाव और आत्मरूचि सराहनीय है.
मैं देख रहा हूँ. कुछ दिनों में संघ का सबसे प्रिय सुपात्र बन गया है.
सदैव संसार की असारता का विचार कर आत्म-संयत रहता है.
आचार्य श्री नमोऽस्तु!
कल्याणऽस्तु! कुछ कहना चाहते हो क्या?
मैं ब्रह्मचर्य व्रत लेकर क्षुल्लक दीक्षा लेना चाहता हूं.
ठीक है, आज से तुम मात्र धोती-दुपट्टा पहनकर ब्रह्मचर्य व्रत पालन करोगे.
जो आज्ञा गुरूवर!

मेरा मन अतिशीघ्र क्षुल्लक दीक्षा लेने को व्याकुल हो रहा है.
पहले दीक्षा हेतु कठिन साधना का अभ्यास करो.
आचार्य श्री सत्य कह रहें हैं. संयमी जीवन में भूख-प्यास, शीत-आतप आदि विभिन्न कष्ट हैं.
यह बड़ा कष्ट साध्य मार्ग है वत्स!
मुझे इसकी परवाह नहीं है.
ठीक है, कल इस विषय में चर्चा करेंगे.
ब्रह्मचारी अरविन्द तुम अपने माता-पिता से आज्ञा ले आये?
आपसे बढ़कर और कौन माता-पिता हो सकते हैं.
क्या वह राजी हो जावेंगे?
उनका मोह कब राजी होने देगा.
दीक्षा के बाद वह तुम्हें ले गये तो?

एक बार फिर विचार कर लो, यह संकटों का मार्ग है.
सत्पुरुषार्थी इसकी परवाह नहीं करता है.
फिर भी पूछा तो जाता ही है.
नहीं पूज्यवर! रागियों को विरागियों का मार्ग कब अच्छा लगता है.
आपका यह शिष्य किसी भी कीमत पर धर्म को कलंकित नहीं करेगा.
तुम मात्र सत्रह वर्ष के हो उस्तरा से बाल कटवाओगे या...
नहीं मैं केशलोंच करूँगा.
जाओ, कल तुम्हारी दीक्षा होगी.
बाई जी कल मेरी क्षुल्लक दीक्षा होगी.
जीजी, आज बुढ़ार नगर के भाग्य जाग गये.
सो तो है. पर मुझे तो बहुत दुख हो रहा है. खेलने खाने की उम्र में क्षुल्लक दीक्षा दी जा रही है.
अरी काकी, धर्म धारण करने की कोई उम्र नहीं होती.
लो इसकी सुनो, मुझे भाषण देने यहाँ भी आ गई.

क्यों बिगड़ रही हो दादी? देखो न, आज़ नगर दुल्हन की तरह सजा हुआ है.
तो क्या करूँ?
तुम सब मेरे पीछे क्यों पड़े हो, मैं तो सिंघई रतन चंद के घर जाने निकली थी.
इस वैराग्यपूर्ण मंगल आयोजन पर नाचो-गाओ.
वही तो ब्रह्मचारी जी के माता-पिता बने हैं.
ब्रह्मचारी अरविन्द दुल्हे की तरह सज-धज कर बग्गी में बैठे साक्षात् राजकुमार लग रहे हैं.
संयोग और वियोग का विचित्र दृश्य देखने को मिल रहा है.
पथरिया से ब्रह्मचारी के माता-पिता नहीं आये

बिना माता-पिता के ही वह अपने वंश का गौरव बढ़ा रहे हैं.
मित्र, भीड़ का पारावार नहीं है.
जरा व्यवस्था पर ध्यान देना.
चिन्ता न करो, वह देखो मंच पर आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज ससंघ विराजमान हैं.
अब हमें शीघ्र ही आचार्य श्री के चरणों में पहुँचना है
दीक्षा हेतु मंत्रोच्चार प्रारम्भ किये जावें.

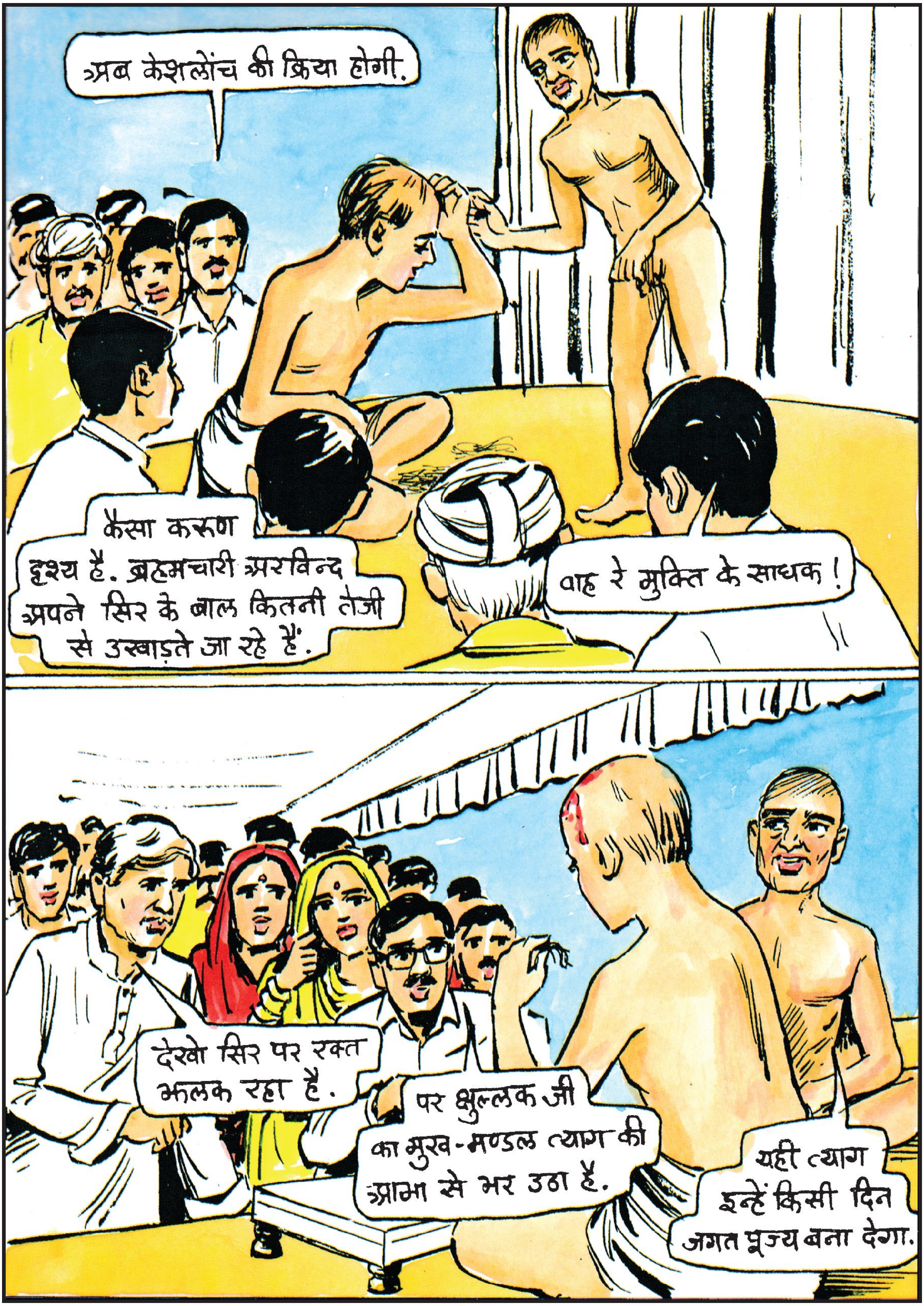
अब केशलोंच की क्रिया होगी.
कैसा करुण दृश्य है. ब्रह्मचारी अरविन्द अपने सिर के बाल कितनी तेजी से उखाड़ते जा रहे हैं.
वाह रे मुक्ति के साधक !
देखो सिर पर रक्त झलक रहा है.
पर क्षुल्लक जी का मुख-मण्डल त्याग की आभा से भर उठा है.
यही त्याग इन्हें किसी दिन जगत पूज्य बना देगा.

क्षुल्लक बनने की सभी क्रियायें पूर्ण हो चुकी हैं.
बोलो समस्त मुनि संघ की जय.
अब आचार्य श्री द्वारा नामकरण किया जावेगा.
धर्मानुरागियो, यह संसार, शरीर और भोग सभी पानी के बुलबुले के समान हैं.
यहाँ कोई भी पदार्थ शरणभूत नहीं है. मात्र धर्म आराधना ही करने योग्य कार्य है.
बोलो आचार्य श्री की जय।
आज से ब्रह्मचारी अरविन्द क्षुल्लक पूर्ण सागर बन गये.

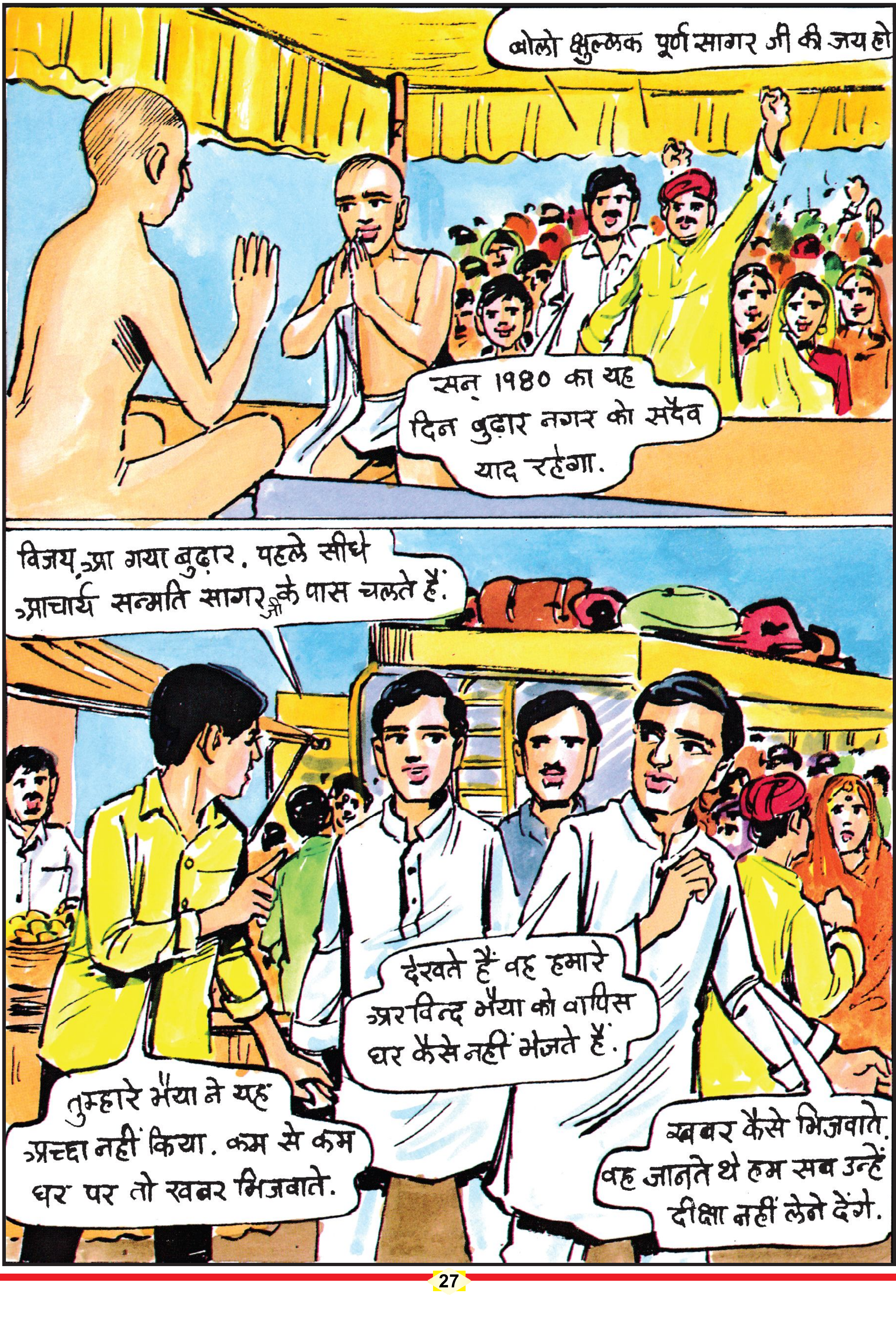
बोलो क्षुल्लक पूर्णसागर जी की जय हो
सन् १९४० का यह दिन बुढ़ार नगर को सदैव याद रहेगा.
विजय, आ गया बुढ़ार. पहले सीधे आचार्य सन्मति सागर जी के पास चलते हैं.
देखते हैं वह हमारे अरविन्द भैया को वापिस घर कैसे नहीं भेजते हैं.
तुम्हारे भैया ने यह अच्छा नहीं किया. कम से कम घर पर तो खबर भिजवाते.
खबर कैसे भिजवाते. वह जानते थे हम सब उन्हें दीक्षा नहीं लेने देंगे.

आचार्य श्री! भैया को हमारे साथ वापस भेज दो. मैं नहीं मानता दीक्षा-वीक्षा. यदि नहीं भेजा तो अच्छी बात नहीं होगी!
शान्त धारण करो बालक!
मैं तब तक शान्त नहीं होऊँगा जब तक भैया मेरे साथ नहीं चलते.
भैया को दीक्षा दी गई है. तुम सबको तो गौरव होना चाहिये.
मैं कुछ नहीं जानता. आप महाराज जी से बोल दें मेरे भैया को मेरे साथ भेज दें.
माँ गजब हो गया!
अरे विजय तुम यहाँ? क्या हुआ?
!
अरविन्द भैया ने क्षुल्लक दीक्षा धारण कर ली है.
क्या कहा? मेरा अरविन्द मुझे छोड़कर चला गया.

अरे! भैया ने किसी को कानों कान खबर नहीं लगने दी.
तुम सब चिन्ता न करो. मैं उसे लेने जा रहा हूँ.
यह खबर सुनकर मुहल्ला-पड़ौसी वाले भी दंग रह गये हैं माँ!
तुम्हारे अरविन्द ने तो कमाल ही कर दिया बहिन.
अब देखते हैं तुम कैसे घर वापिस नहीं चलते.
यदि यह जाता है तो आप सहर्ष ले जाओ, मेरी आज्ञा से.
सीधे-सीधे चलो. नहीं तो बाँधकर ट्रेन में डालकर ले जाऊँगा.

यदि आप ऐसा करोगे तो मैं अन्न-जल त्याग कर दूँगा.
मजबूरीवश मुझे जवाब देना पड़ रहा है.
चलो कुंदन लाल, अब तो पुलिस-थाना ही जाना पड़ेगा.
मुंशी जी, मेरी बात सुनकर रिपोर्ट लिखिए.
आपकी बात सुनकर मेरा तो यही कहना है, व्यर्थ में ही आप सब उसके उज्जवल भविष्य को धूमिल कर रहे हो.
अरे, तुम भी उसकी तरफदारी करने लगे!
सोचो, आज का युवा वर्ग गलत राह पर चल रहा है. धर्म और परमात्मा को याद करने की फुर्सत ही कहाँ है उसे.

यह पुलिस स्टेशन है या धर्मस्थल? मेरा साथ देने को आज कोई तैयार नहीं हो रहा है.
बात साथ देने की नहीं समझने की है. आप कितने भाग्यशाली हैं जो ऐसे होनहार पुत्र को जन्म दिया
कपूर चंद जी, मुंशी जी कह तो सत्य रहे हैं.
आपका पुत्र आगे चलकर न जाने कितने जीवों को सही मार्ग पर लाकर अपना तथा आपका नाम रोशन करेगा.
चलो कुन्दन लाल जी, एक बार अरविन्द से मिल तो लेते हैं.
हाँ, हाँ क्यों नहीं चलो चलते हैं.
महाराज जी! मेरा अरविन्द छोटा है, भोला है.
यह तो और भी अच्छी बात है. जिसके मन में विषय कषाय की कालिमा नहीं जम पाती, जो कर्म बंध से डरता हो, साधु पथ पर वही चल सकता है.

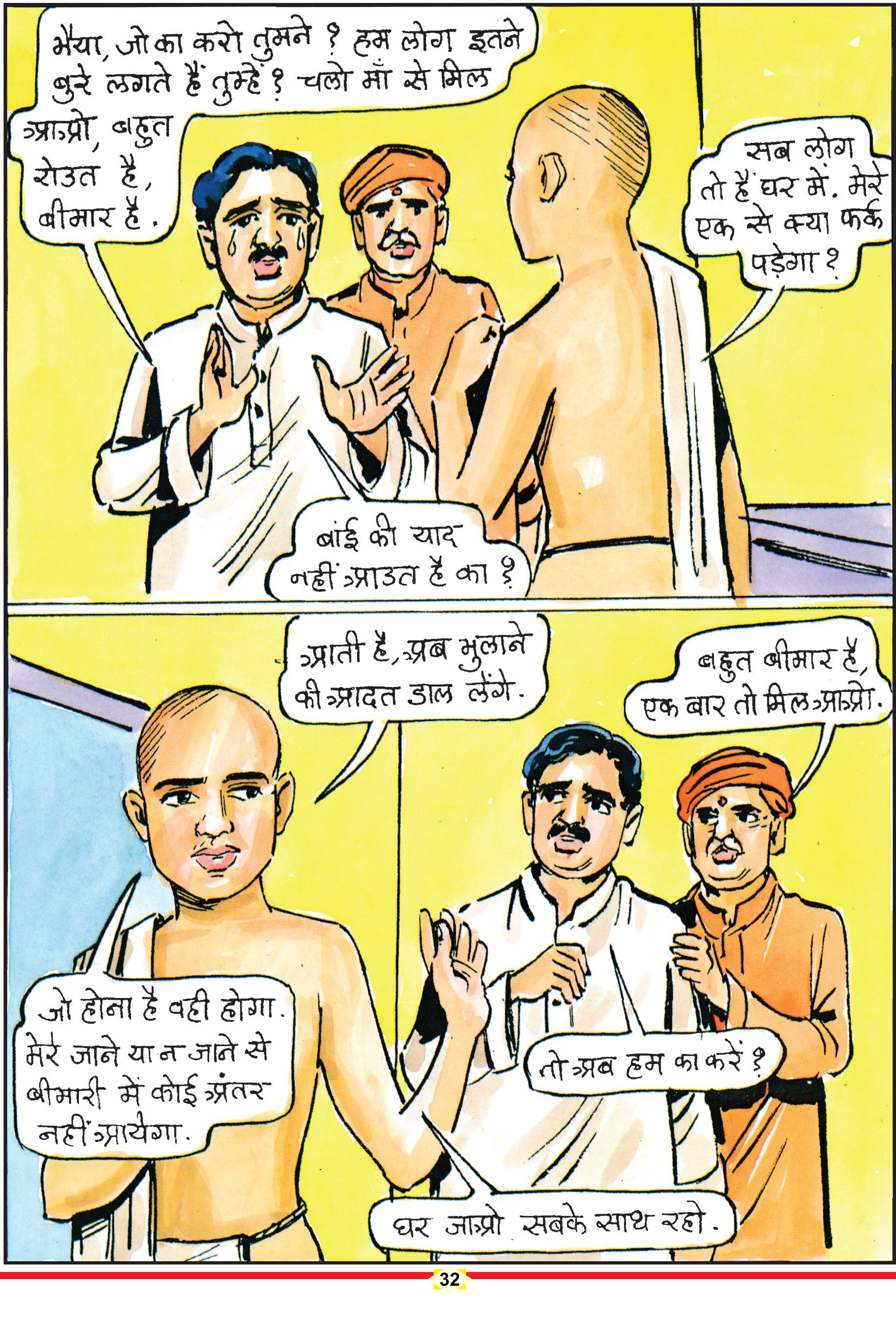

भैया, जो का करो तुमने ? हम लोग इतने बुरे लगते हैं तुम्हें ? चलो माँ से मिल
आओ, बहुत रोउत है, बीमार है.
सब लोग तो हैं घर में. मेरे एक से क्या फर्क पड़ेगा ?
बाई की याद नहीं आउत है का ?
आती है, अब भुलाने की आदत डाल लेंगे.
बहुत बीमार है, एक बार तो मिल आओ.
जो होना है वही होगा. मेरे जाने या न जाने से बीमारी में कोई अंतर नहीं आयेगा.
तो अब हम का करें ?
घर जाओ सबके साथ रहो.

इस प्रकार दृढ़ निश्चय वाले आत्म साधना के धनी क्षुल्लक पूर्ण सागर ध्यान-अध्ययन करते हुए दुर्ग, नागपुर, कारंजा और सम्मेद शिखर की वन्दना करते हुए पावापुर पहुँचे.

क्षुल्लक पूर्ण सागर एक गृहस्थ के साथ प्रातः काल शौच के लिए जा रहे हैं.

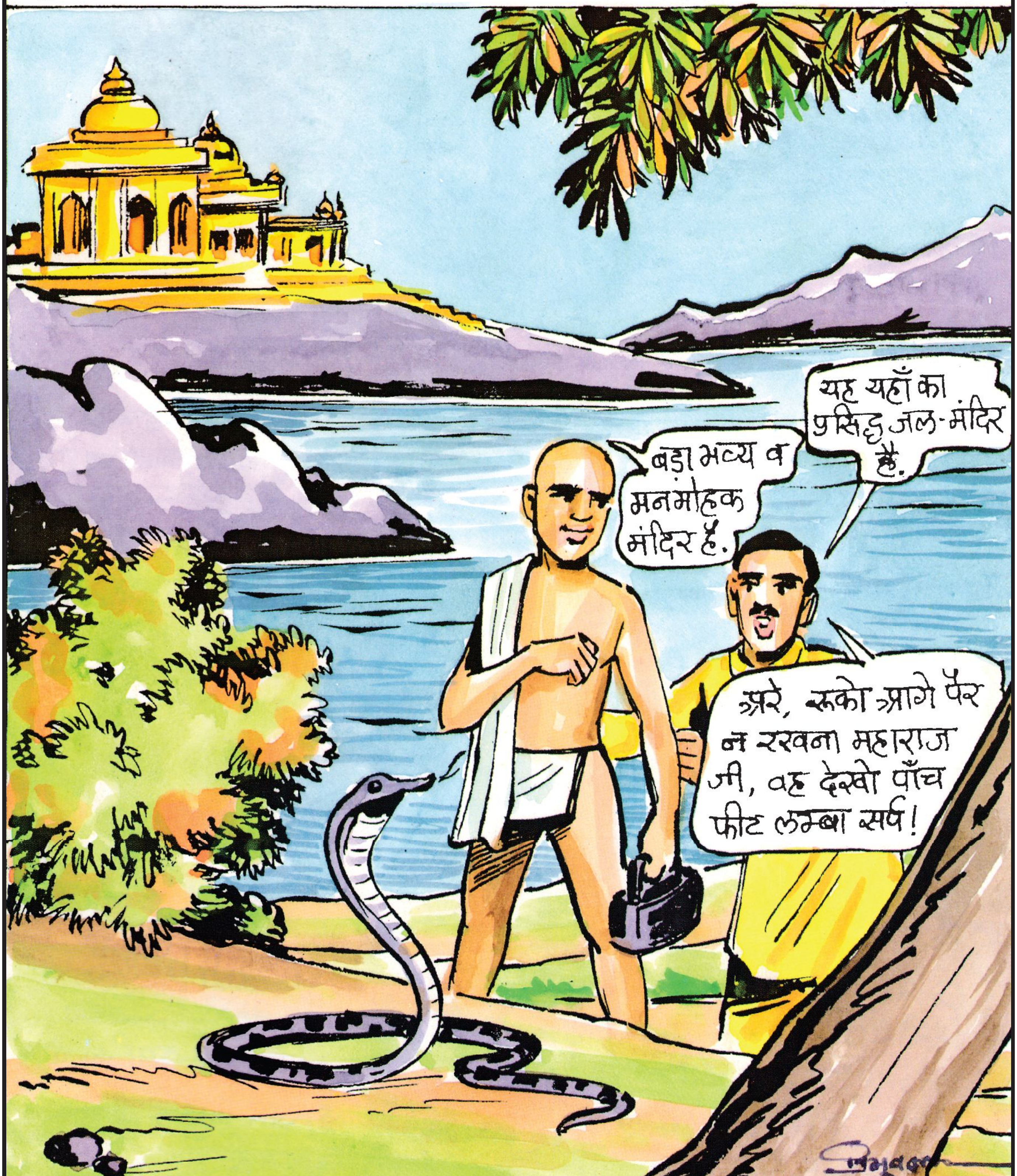

बंधु, बिना बैर के कोई भी जीव हानि नहीं पहुँचाता है. देखो सर्प जमीन पर फन पटककर खेत में कूद कर भी लौट-लौट कर देख रहा है.
आज तो बाल-बाल बच गए!
यह सताने नहीं हमें शिक्षा देने आया था, कि ईर्या समिति का विधिवत पालन करना चाहिये. यहाँ-वहाँ नहीं देखना चाहिये.
सच कहा है. किसी वस्तु या स्थान को चलते-चलते नहीं खड़े होकर देखना चाहिये.

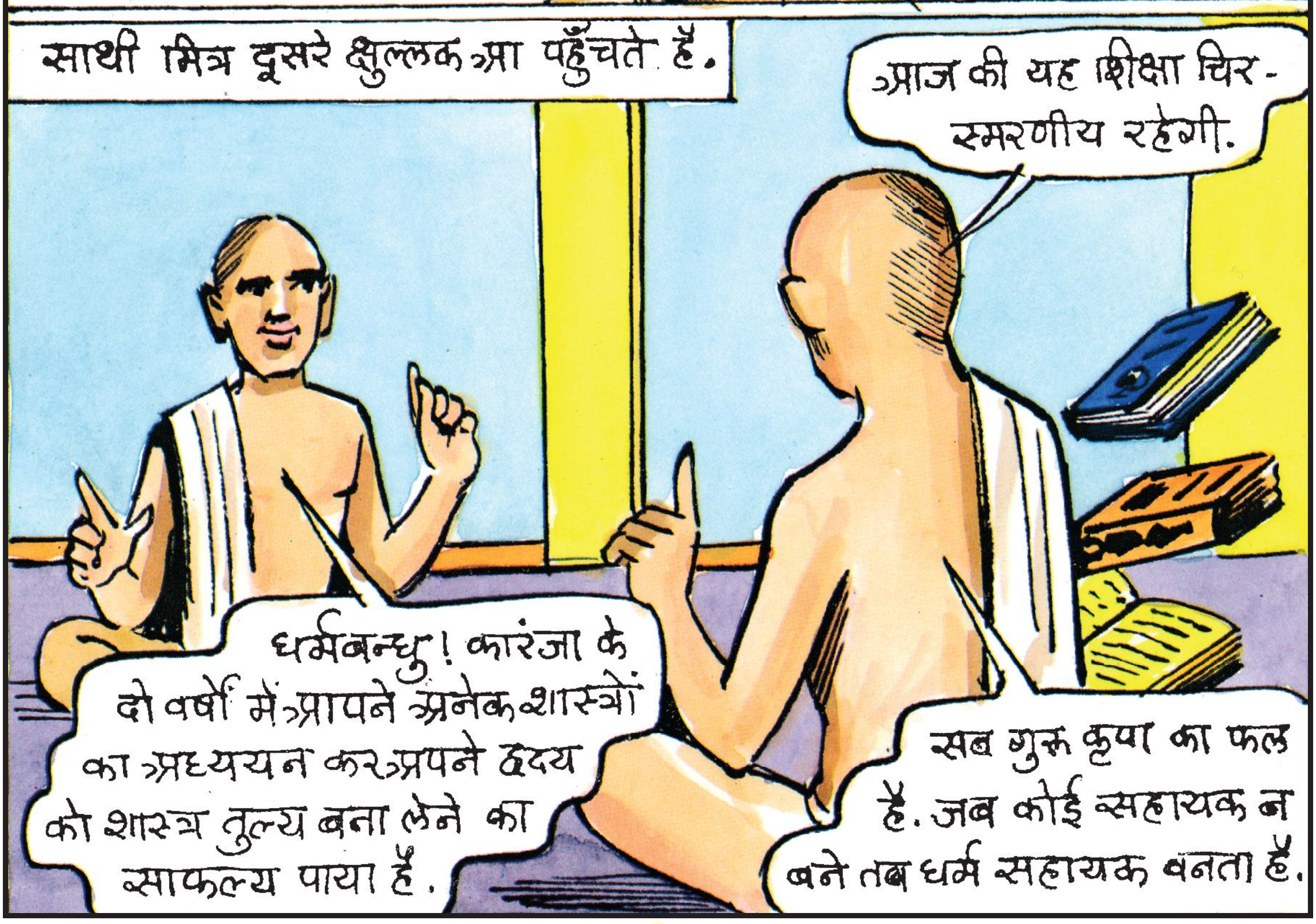
साथी मित्र दूसरे क्षुल्लक आ पहुँचते हैं.
आज की यह शिक्षा चिर-स्मरणीय रहेगी.
धर्मबन्धु! कारंजा के दो वर्षों में आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन कर अपने हृदय को शास्त्र तुल्य बना लेने का साफल्य पाया है.
सब गुरु कृपा का फल है. जब कोई सहायक न बने तब धर्म सहायक बनता है.

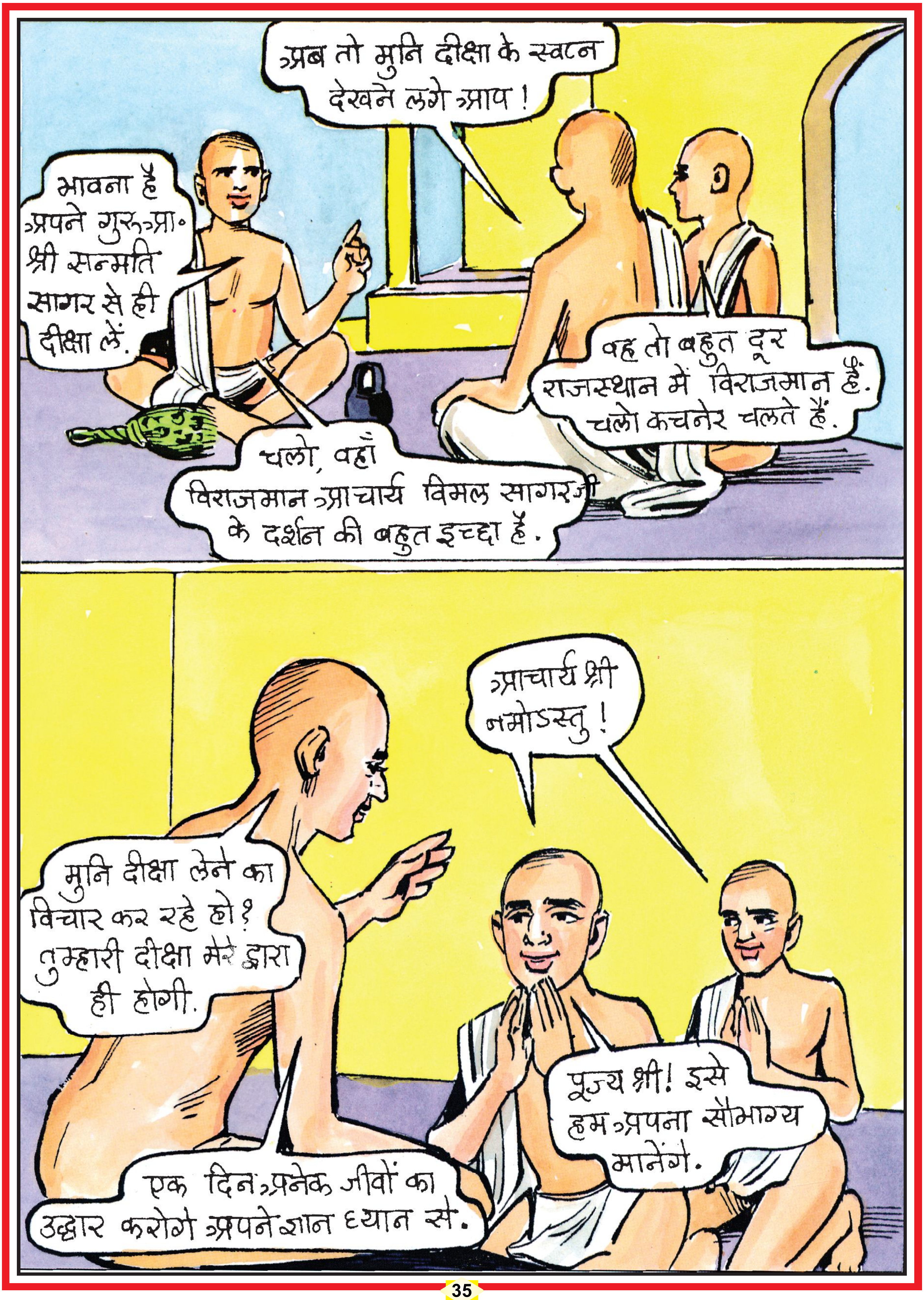
अब तो मुनि दीक्षा के स्वप्न देखने लगे आप !
भावना है अपने गुरु आ. श्री सन्मति सागर से ही दीक्षा लें.
वह तो बहुत दूर राजस्थान में विराजमान हैं. चलो कचनेर चलते हैं.
चलो, वहाँ विराजमान आचार्य विमल सागर जी के दर्शन की बहुत इच्छा है.
आचार्य श्री नमोऽस्तु !
मुनि दीक्षा लेने का विचार कर रहे हो? तुम्हारी दीक्षा मेरे द्वारा ही होगी.
पूज्य श्री! इसे हम अपना सौभाग्य मानेंगे.
एक दिन अनेक जीवों का उद्धार करोगे अपने ज्ञान ध्यान से.

बन्धुओं, मध्य प्रदेश पथरिया ग्राम के निवासी श्री अरविन्द कुमार को जो यहाँ क्षुल्लक पूर्ण सागर के रूप में विराजमान हैं. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज द्वारा निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा प्रदान की जा रही है.
इनके दीक्षा के माता-पिता बनने का सौभाग्य औरंगाबाद के दो प्रतिमाधारी सेठ स्वरूपचंद एवं उनकी धर्मपत्नि को मिला है.

कैसा अपूर्व दृश्य है क्षुल्लक जी ने केशलोंच प्रारम्भ कर दिया है.
औरंगाबाद के गरिमा मंडित इतिहास में आज 5 दिसम्बर 1983 का दिन विशेष बनकर आया है.
तभी तो आचार्य श्री ने क्षुल्लक जी को ऐलक दीक्षा न देकर सीधे मुनि दीक्षा प्रदान की है.
क्षुल्लक जी, मात्र बीस वर्ष छः माह की उम्र में दिगम्बर मुनि वैराग्य को प्राप्त करने में सफल हुए हैं.

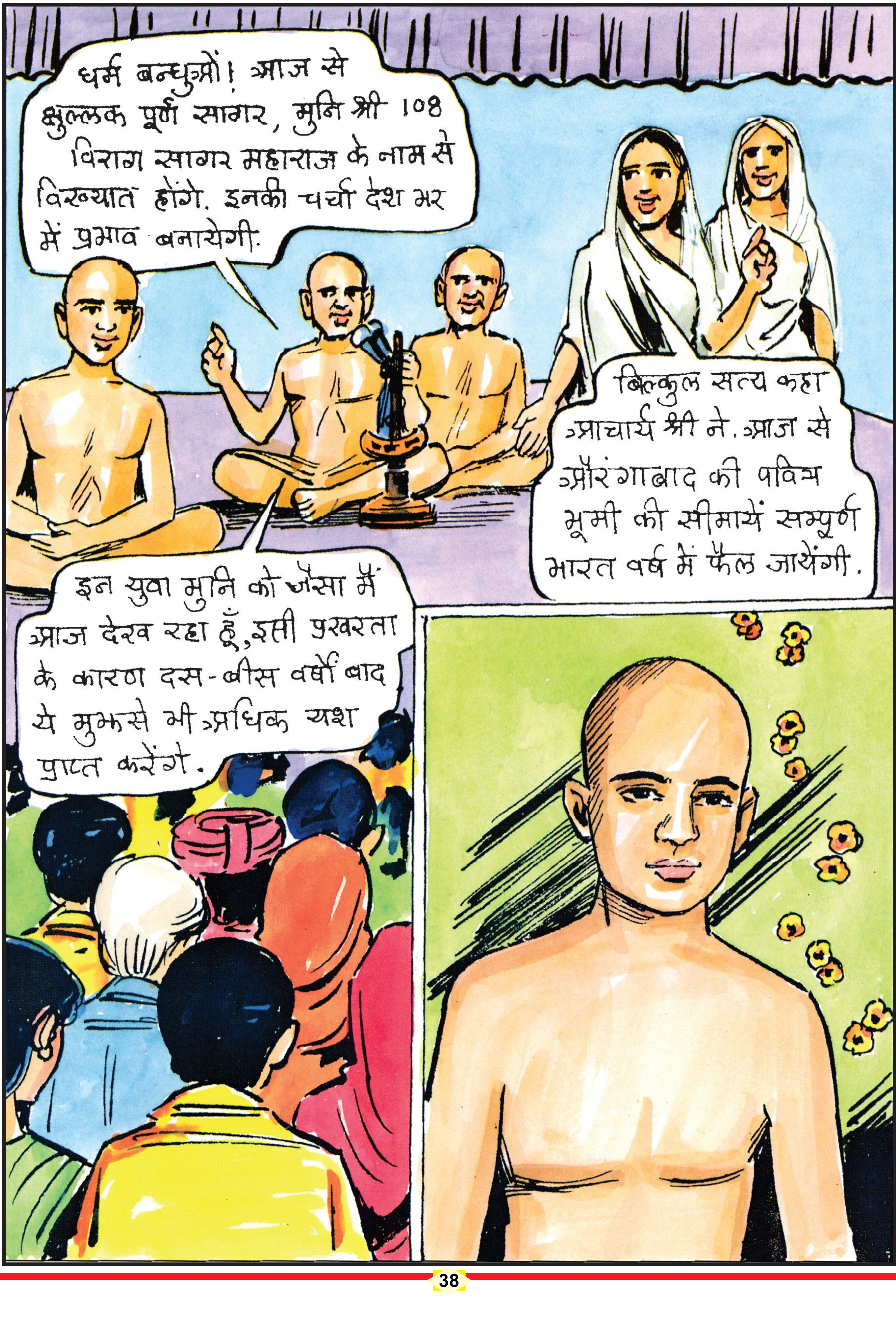
धर्म बन्धुओं! आज से क्षुल्लक पूर्ण सागर, मुनि श्री 108 विराग सागर महाराज के नाम से विख्यात होंगे. इनकी चर्चा देश भर में प्रभाव बनायेगी.
इन युवा मुनि को जैसा मैं आज देख रहा हूँ, इसी प्रखरता के कारण दस-बीस वर्षों बाद ये मुझसे भी अधिक यश प्राप्त करेंगे.
बिल्कुल सत्य कहा आचार्य श्री ने. आज से औरंगाबाद की पवित्र भूमी की सीमायें सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैल जायेंगी.

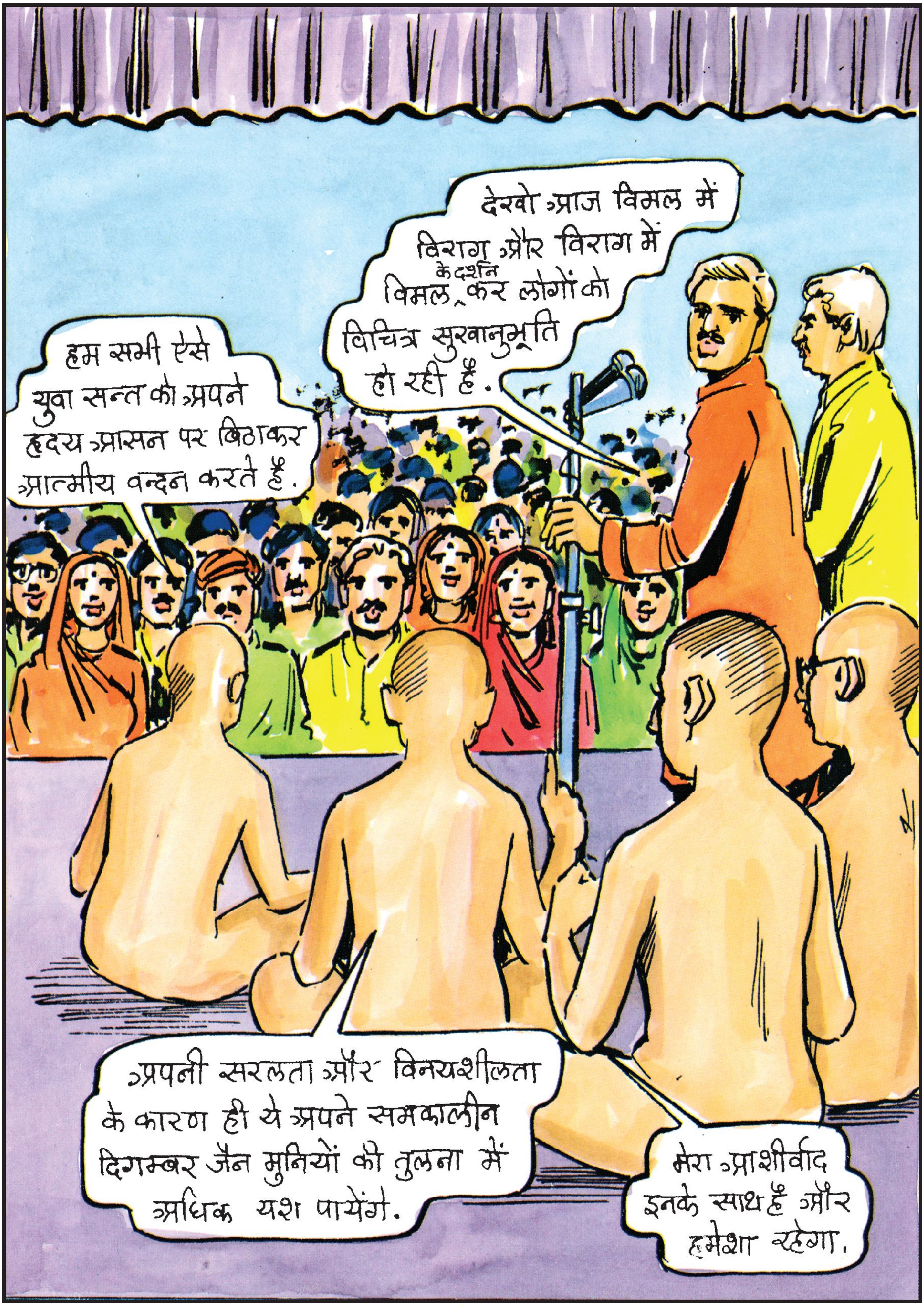
देखो आज विमल में विराग और विराग में विमल के दर्शन कर लोगों को विचित्र सुखानुभूति हो रही है.
हम सभी ऐसे युवा सन्त को अपने हृदय आसन पर बिठाकर आत्मीय वन्दन करते हैं.
अपनी सरलता और विनयशीलता के कारण ही ये अपने समकालीन दिगम्बर जैन मुनियों की तुलना में अधिक यश पायेंगे.
मेरा आशीर्वाद इनके साथ है और हमेशा रहेगा.

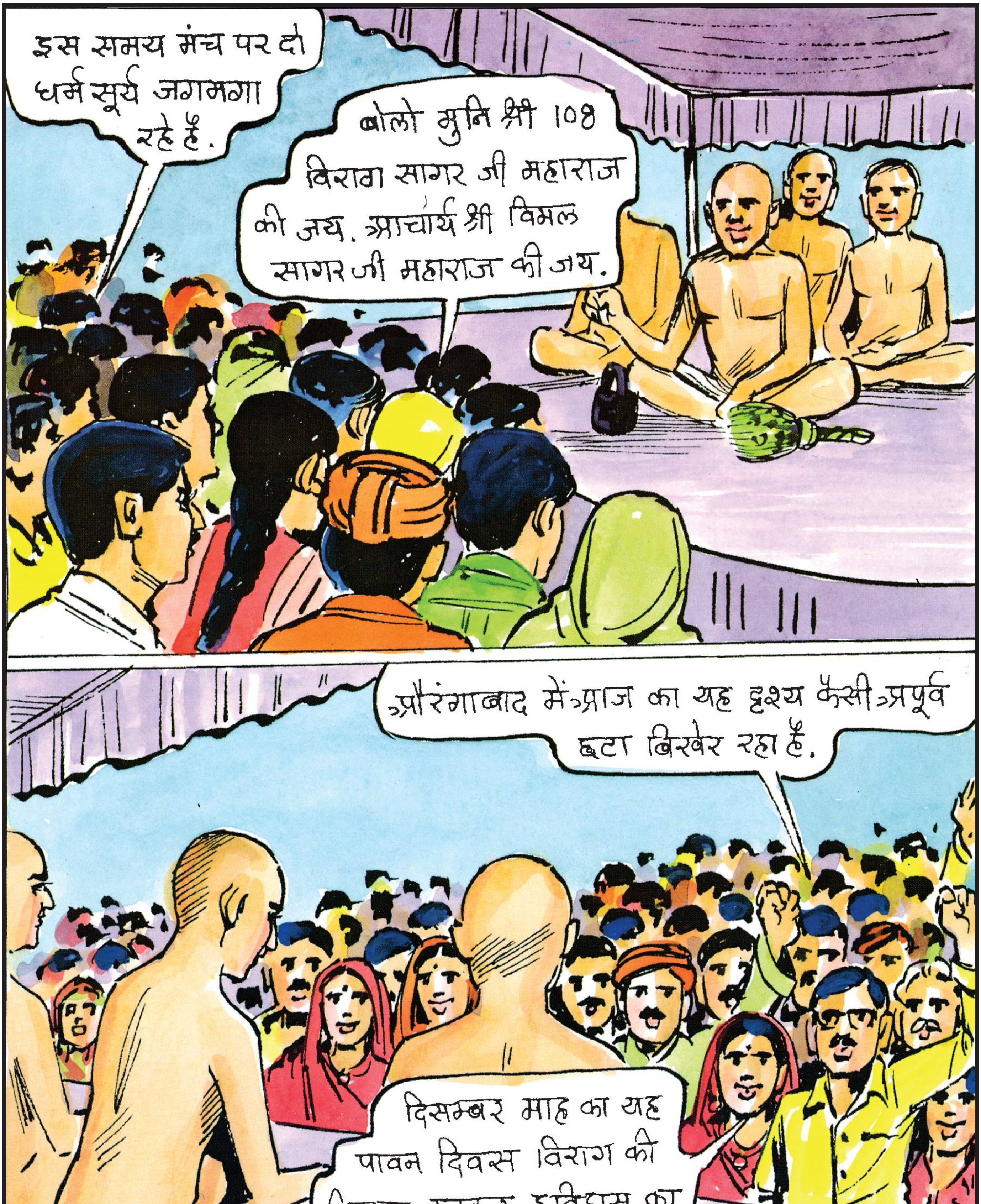
इस समय मंच पर दो धर्म सूर्य जगमगा रहे हैं.
बोलो मुनि श्री 108 विराग सागर जी महाराज की जय. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज की जय.
औरंगाबाद में आज का यह दृश्य कैसी अपूर्व छटा बिखेर रहा है.
दिसम्बर माह का यह पावन दिवस विराग की किरण बनकर इतिहास का स्वर्णिम क्षण बन गया है.
बोलो मुनि श्री विराग सागर की जय.

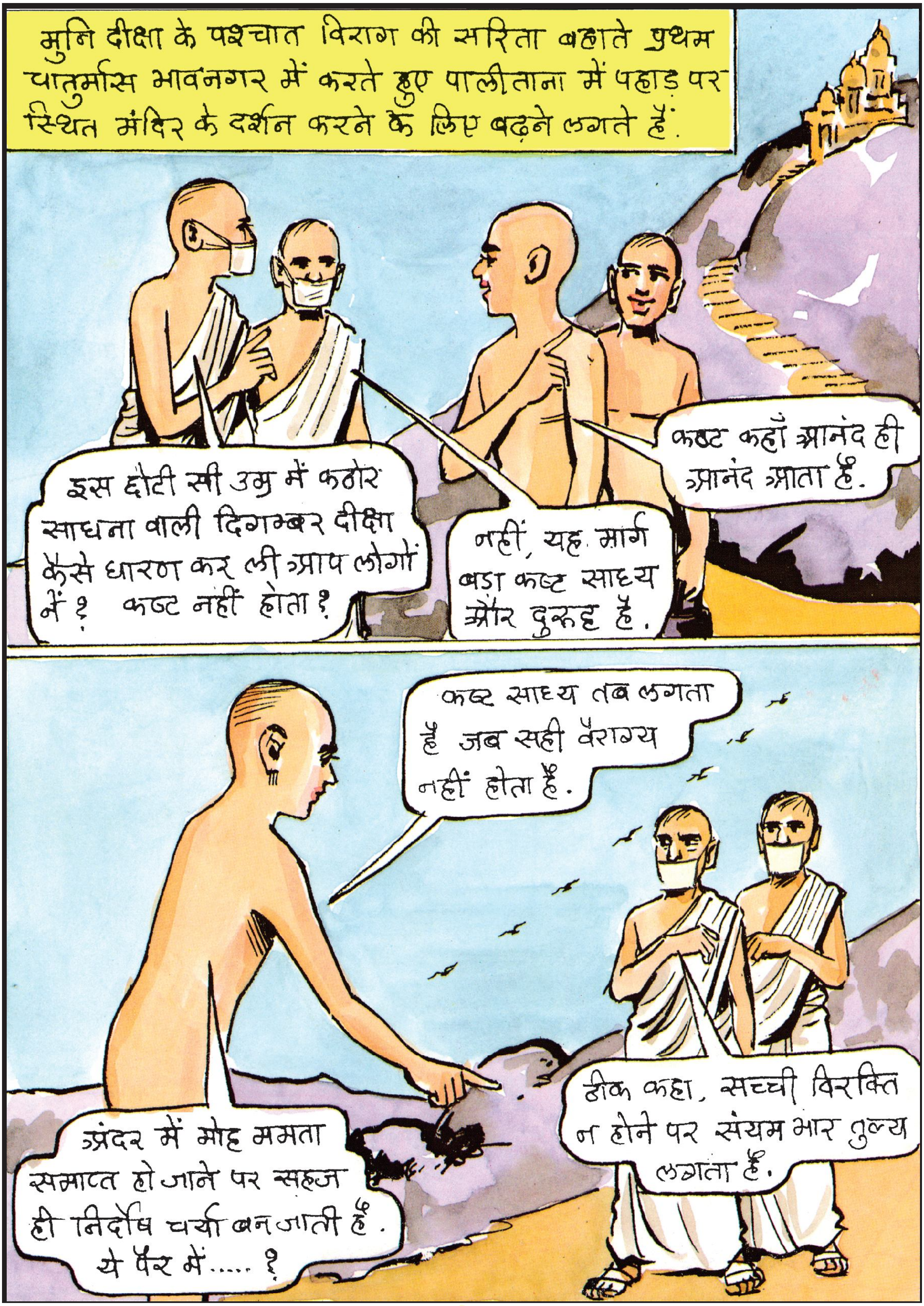

मुनि दीक्षा के पश्चात विराग की सरिता बहाते प्रथम चातुर्मास भावनगर में करते हुए पालीताना में पहाड़ पर स्थित मंदिर के दर्शन करने के लिए बढ़ने लगते हैं.
इस छोटी सी उम्र में कठोर साधना वाली दिगम्बर दीक्षा कैसे धारण कर ली आप लोगों नें? कष्ट नहीं होता?
नहीं, यह मार्ग बड़ा कष्ट साध्य और दुरूह है.
कष्ट कहाँ आनंद ही आनंद आता है.
कष्ट साध्य तब लगता है जब सही वैराग्य नहीं होता है.
ठीक कहा, सच्ची विरक्ति न होने पर संयम भार तुल्य लगता है.
अंदर में मोह ममता समाप्त हो जाने पर सहज ही निर्दोष चर्या बन जाती है. ये पैर में..... ?

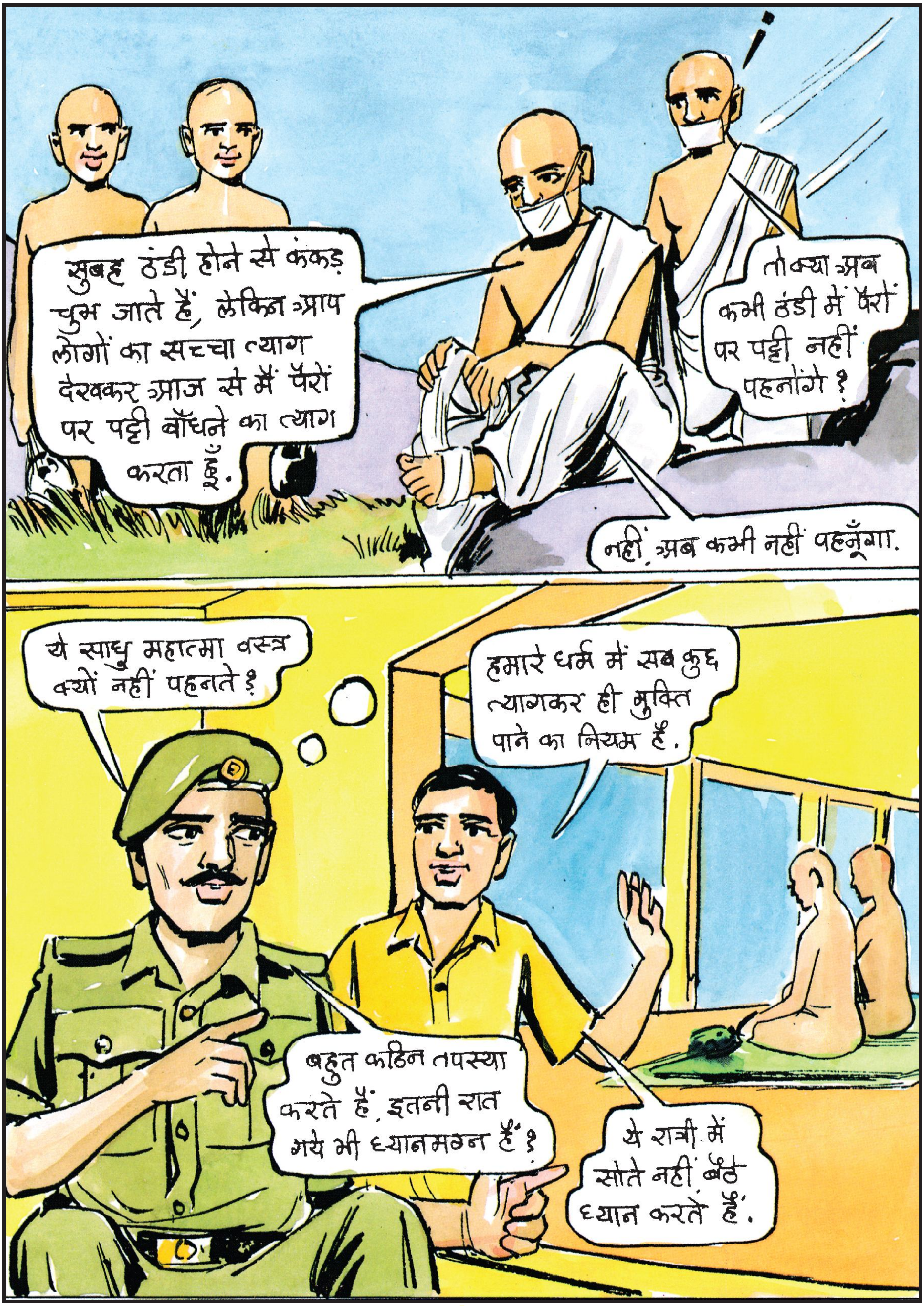
सुबह ठंडी होने से कंकड़ चुभ जाते हैं, लेकिन आप लोगों का सच्चा त्याग देखकर आज से मैं पैरों पर पट्टी बाँधने का त्याग करता हूँ.
तो क्या अब कभी ठंडी में पैरों पर पट्टी नहीं पहनोगे ?
नहीं, अब कभी नहीं पहनूँगा.
ये साधु महात्मा वस्त्र क्यों नहीं पहनते ?
हमारे धर्म में सब कुछ त्यागकर ही मुक्ति पाने का नियम है.
बहुत कठिन तपस्या करते हैं, इतनी रात गये भी ध्यानमग्न हैं ?
ये रात्री में सोते नहीं बैठ ध्यान करते हैं.

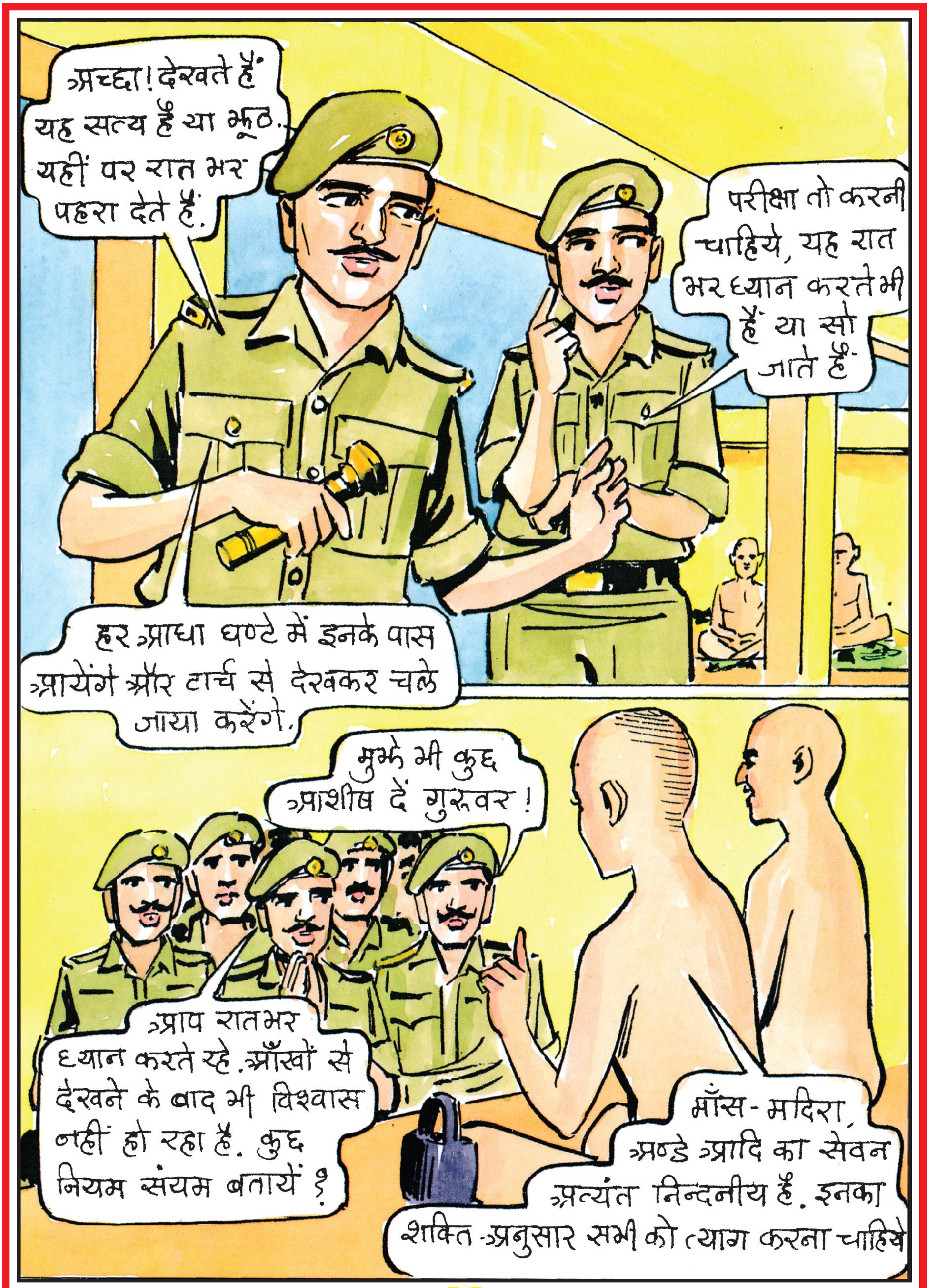
अच्छा! देखते हैं यह सत्य है या झूठ. यहीं पर रात भर पहरा देते हैं.
परीक्षा तो करनी चाहिये, यह रात भर ध्यान करते भी हैं या सो जाते हैं
हर आधा घण्टे में इनके पास आयेंगे और टार्च से देखकर चले जाया करेंगे.
मुझे भी कुछ आशीष दें गुरुवर!
आप रात भर ध्यान करते रहे. आँखों से देखने के बाद भी विश्वास नहीं हो रहा है. कुछ नियम संयम बतायें?
माँस-मदिरा, अण्डे आदि का सेवन अत्यंत निन्दनीय है. इनका शक्ति अनुसार सभी को त्याग करना चाहिये

इन सबका त्याग करने वाले से आप भोजन ले सकते हैं क्या ?
यदि हमारे नियमों के अनुसार कोई भोजन दे तो.
आपके नियम क्या हैं ?
कुए का जल (छना हुआ) हाथ की चक्की का पिसा आटा, मर्यादायुक्त सामग्री.
इन नियमों को हम स्वीकार करते हैं, अब आप क्या हम लोगों से भोजन करेंगे ?
ठीक है हम आहार देखकर ही सन्तुष्टि कर लेंगे.
यदि आप लोग ये चमडे के जूते, बेल्ट आदि का त्याग कर दें तो ?
यह असम्भव है गुरुवर ?
आप लोगों की भावना प्रतिश्रेष्ठ है. यदि त्याग सम्भव नहीं है तो आहार देखकर ही भावना पूर्ण की जा सकती है.

माँ, ये भीड़ कैसी चली आ रही है.
लगता है कोई साधु महात्मा आ रहे हैं.
ये तो अपने ही मुनिराज आ रहे हैं. चलो चलकर नमस्कार करते हैं.
भाई सुना है, ये विराग सागर जी महाराज जूगागढ, निजाम, जयपुर, भिण्ड वर्षायोग कर पुनः भिण्ड जा रहे हैं.
बिल्कुल सच सुना है. भिण्ड की समाज दुबारा चातुर्मास कराकर अपने को धन्य समझेगी.
जहाँ साधुओं के चरण पड़ते हैं वह स्थान तीर्थ सा बन जाता है.
अरे, मुनि श्री तो बहुत आगे निकल गये अकेले ही. क्षुल्लक व ब्रह्मचारी के साथ

अरे सुनो, आप कौन हैं? इस तरह नंगे क्यों घूम रहे हो? शर्म नहीं आती है क्या?
बन्धु, शर्म उन्हें आती है जिनके मन में विकार भावना होती है. हम लोग उसे जीत चुके हैं.
वाह! बहाना अच्छा बना लेते हो. हमारी बहू-बेटियाँ रहती हैं. आप ऐसे नंगे यहाँ से नहीं निकल सकते.
घर में छोटे बालक भी तो नंगे रहते हैं. उसे देखकर किसी का मन डिग जाये तो उस बालक का क्या गुनाह?
भाषण तो अच्छा दे लेते हो.
भाषण नहीं कटु सत्य है यह. हर मनुष्य नग्न ही जन्म लेता है और नग्न ही जाता है.
कान खोल कर सुन लो, आप यहाँ से आगे नहीं जा सकते.

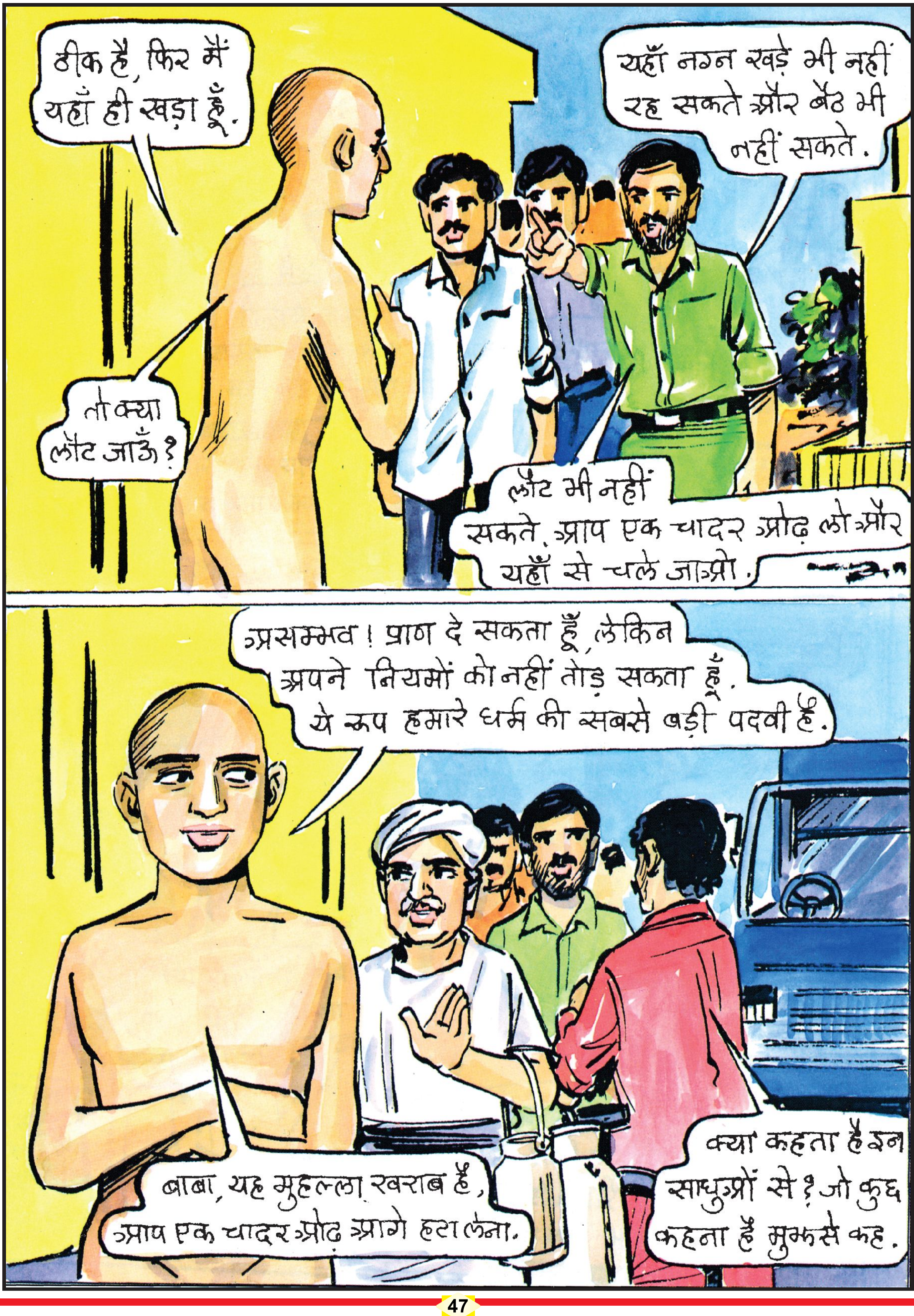
ठीक है, फिर मैं यहाँ ही खड़ा हूँ.
यहाँ नग्न खड़े भी नहीं रह सकते और बैठ भी नहीं सकते.
तो क्या लौट जाऊँ?
लौट भी नहीं सकते. आप एक चादर ओढ़ लो और यहाँ से चले जाओ.
असम्भव! प्राण दे सकता हूँ, लेकिन अपने नियमों को नहीं तोड़ सकता हूँ. ये रूप हमारे धर्म की सबसे बड़ी पदवी है.
बाबा, यह मुहल्ला खराब है, आप एक चादर ओढ़ आगे हटा लेना.
क्या कहता है इन साधुओं से? जो कुछ कहना है मुझसे कह.

किसमें ताकत है इनका रास्ता रोकने की? ये साक्षात् महेश्वर हैं! बड़े-बड़े मंत्रीगण भी इनके दर्शनों को तरसते हैं.
इनकी कठोर तपस्या में बड़ा सत है. ये सारे भारत में भ्रमण करते हैं.

शीघ्र ही क्षमा माँग और भाग जा यहाँ से. नहीं तो खैर नहीं तेरी...
हाँ भैया, ये औघड़ बाबा हैं शीघ्र ही भाग जा यहाँ से.
बस इसे इतना ही दण्ड काफी है, अभी तक ये नग्न साधुओं से अपरिचित थे अब कभी नहीं भूलेंगे.

साधु महाराज।
मुझे क्षमा कर दो.
बन्धु, दो बातों का सदैव ध्यान रखना, जिसका कोई सहारा नहीं होता उसका खुदा होता है और नंगा खुदा से भी बड़ा होता है.
महात्माजी। आपकी बात सदैव ध्यान रखूँगा.
अभयदान देकर आगे बढ़ जाते हैं.
अरी जीजी, सुना है पू. मुनि श्री विरागसागर जी महाराज भिण्ड, श्रेयांसगिरी चातुर्मास करते हुए खजुराहो पहुँच गये हैं.
खजुराहो तो विदेशी यात्रियों का घूमने का केन्द्र है.
वहाँ तो अमेरिका, कनाडा न जाने कहाँ-कहाँ से यात्री आते हैं.
ऐ भाई, ये कौन हैं.
ये दिगम्बर जैन साधु हैं. धर्म की वास्तविकता यहाँ से ही प्रारम्भ होती है.
ओह! आज मैंने जीवन में प्रथमबार दिगम्बर जैन साधु के दर्शन किये हैं.

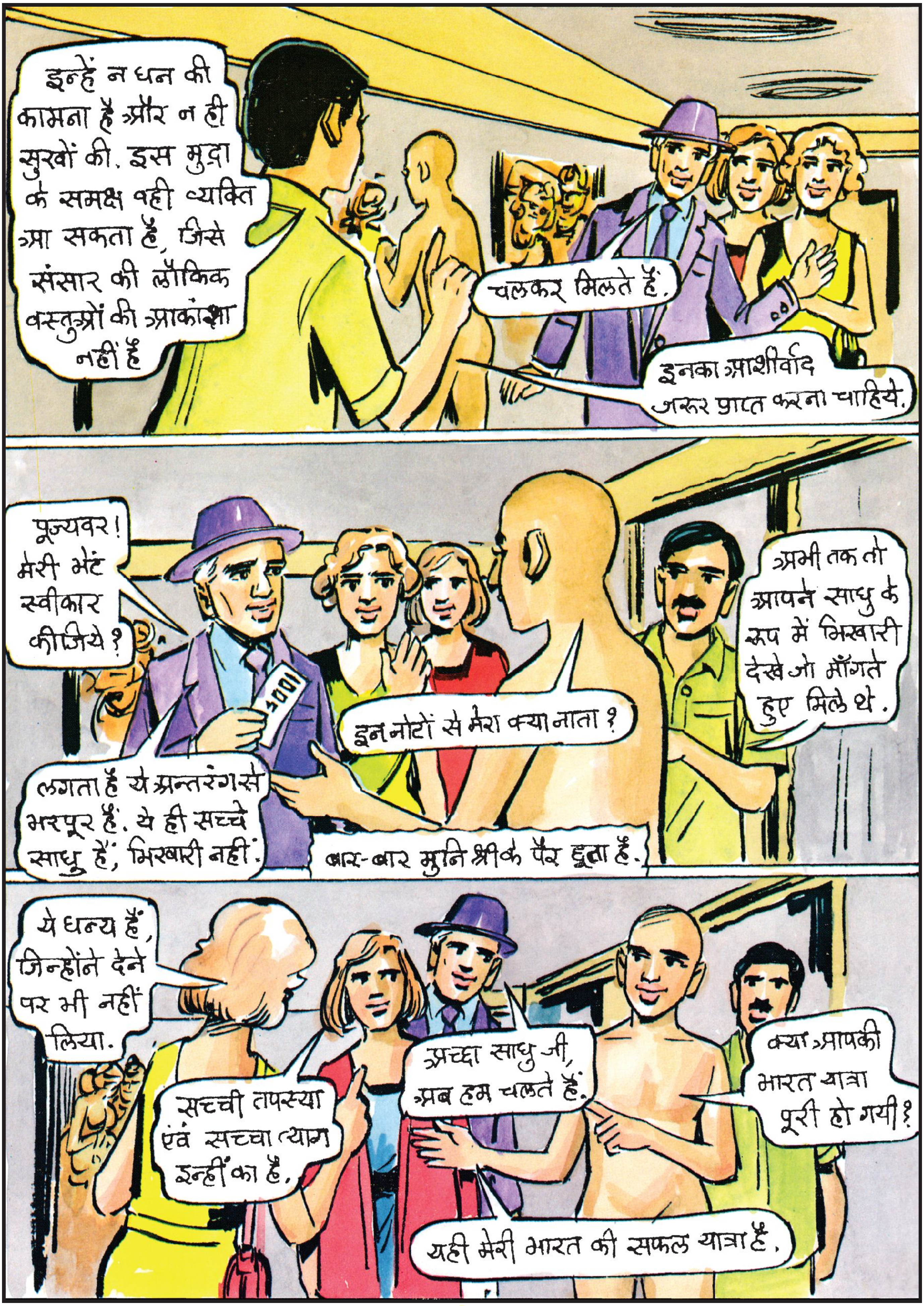

इन्हें न धन की कामना है और न ही सुखों की. इस मुद्रा के समक्ष वही व्यक्ति आ सकता है, जिसे संसार की लौकिक वस्तुओं की आकांक्षा नहीं है
चलकर मिलते हैं.
इनका आशीर्वाद जरूर प्राप्त करना चाहिये.
पूज्यवर! मेरी भेंट स्वीकार कीजिये?
अभी तक तो आपने साधु के रूप में भिखारी देखे जो माँगते हुए मिले थे.
इन नोटों से मेरा क्या नाता?
लगता है ये अन्तरंग से भरपूर हैं. ये ही सच्चे साधु हैं, भिखारी नहीं.
बार-बार मुनि श्री के पैर छूता है.
ये धन्य हैं, जिन्होंने देने पर भी नहीं लिया.
सच्ची तपस्या एवं सच्चा त्याग इन्हीं का है.
अच्छा साधु जी, अब हम चलते हैं.
क्या आपकी भारत यात्रा पूरी हो गयी?
यही मेरी भारत की सफल यात्रा है.

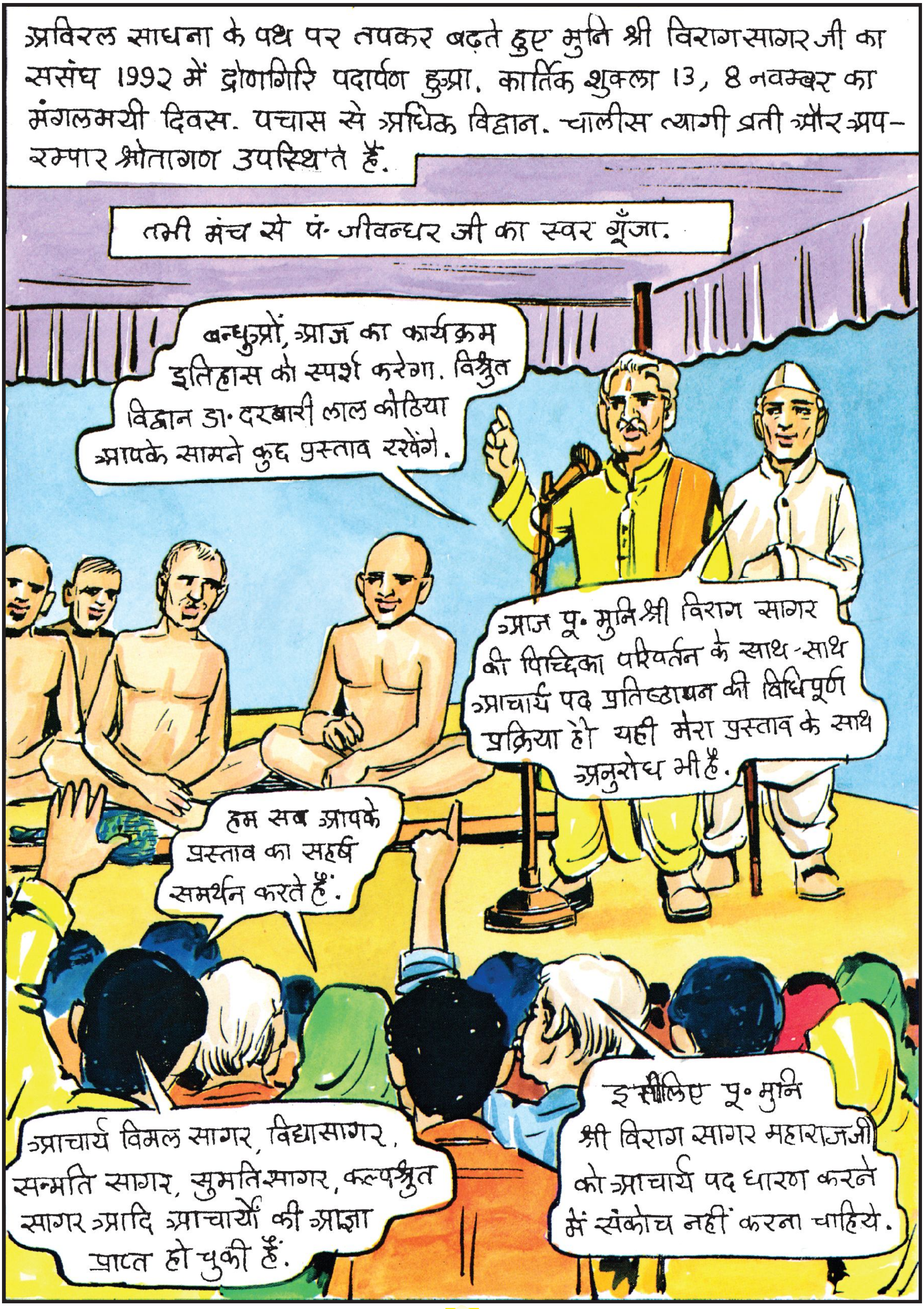
अविरल साधना के पथ पर तपकर बढ़ते हुए मुनि श्री विरागसागर जी का ससंघ 1992 में द्रोणगिरि पदार्पण हुआ. कार्तिक शुक्ला 13, 8 नवम्बर का मंगलमयी दिवस. पचास से अधिक विद्वान. चालीस त्यागी व्रती और अपरम्पार श्रोतागण उपस्थित हैं.
तभी मंच से पं. जीवन्धर जी का स्वर गूँजा.
बन्धुओं, आज का कार्यक्रम इतिहास को स्पर्श करेगा. विश्रुत विद्वान डा. दरबारी लाल कोठिया आपके सामने कुछ प्रस्ताव रखेंगे.
आज पू. मुनिश्री विराग सागर की पिच्छिका परिवर्तन के साथ-साथ आचार्य पद प्रतिष्ठापन की विधिपूर्ण प्रक्रिया हो यही मेरा प्रस्ताव के साथ अनुरोध भी है.
हम सब आपके प्रस्ताव का सहर्ष समर्थन करते हैं.
आचार्य विमल सागर, विद्यासागर, सन्मति सागर, सुमतिसागर, कल्पश्रुत सागर आदि आचार्यों की आज्ञा प्राप्त हो चुकी है.
इसीलिए पू. मुनि श्री विराग सागर महाराजजी को आचार्य पद धारण करने में संकोच नहीं करना चाहिये.

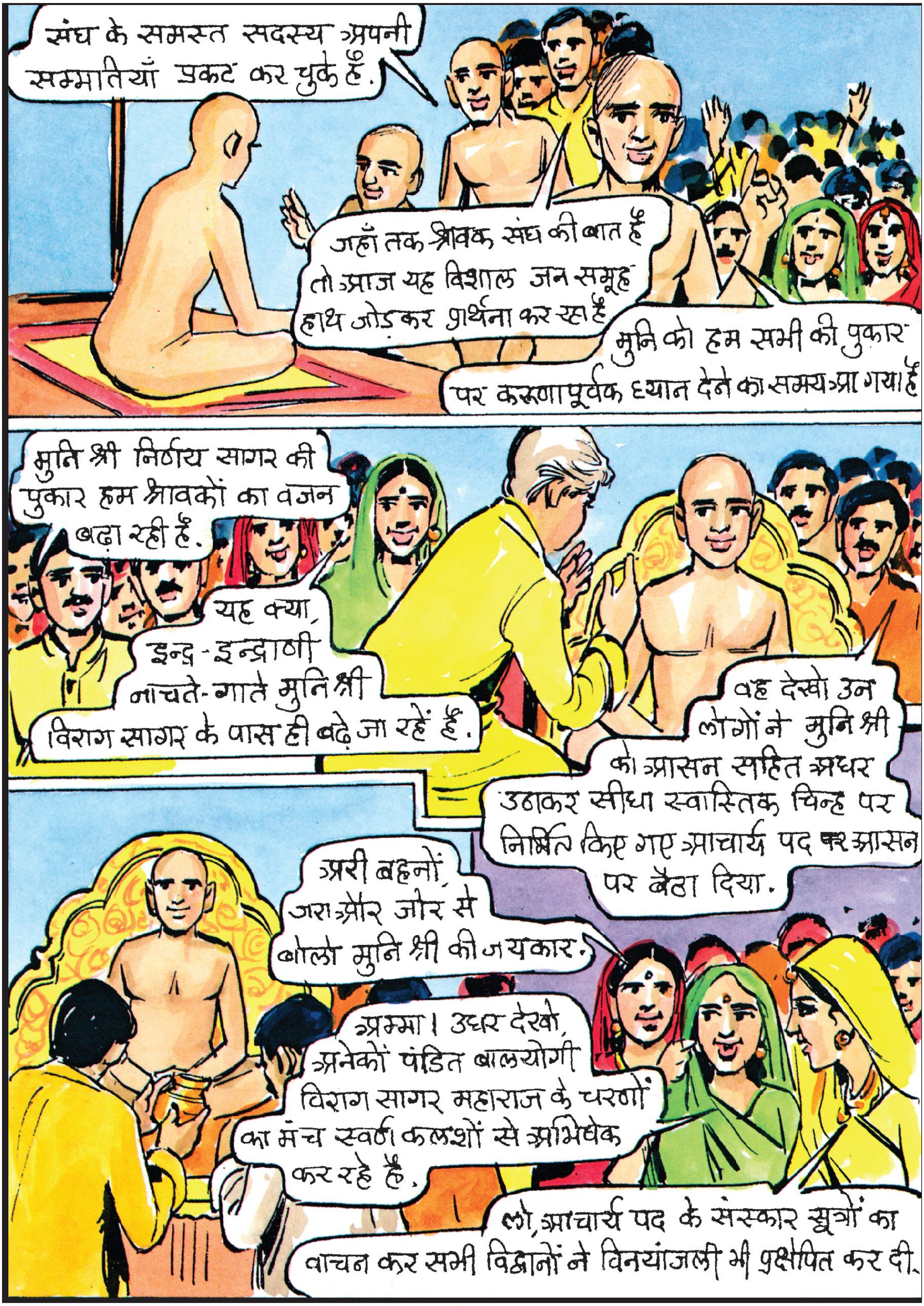

संघ के समस्त सदस्य अपनी सम्मतियाँ प्रकट कर चुके हैं.
जहाँ तक श्रावक संघ की बात है तो आज यह विशाल जन समूह हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा है.
मुनि को हम सभी की पुकार पर करुणापूर्वक ध्यान देने का समय आ गया है
मुनि श्री निर्णय सागर की पुकार हम श्रावकों का वजन बढ़ा रही हैं.
यह क्या, इन्द्र-इन्द्राणी नाचते-गाते मुनि श्री विराग सागर के पास ही बढ़े जा रहे हैं.
वह देखो उन लोगों ने मुनि श्री को आसन सहित अधर उठाकर सीधा स्वास्तिक चिन्ह पर निर्मित किए गए आचार्य पद आसन पर बैठा दिया.
अरी बहनों, जरा और जोर से बोलो मुनि श्री की जयकार.
अम्मा! उधर देखो, अनेकों पंडित बालयोगी विराग सागर महाराज के चरणों का मंच स्वर्ण कलशों से अभिषेक कर रहे हैं.
लो, आचार्य पद के संस्कार सूत्रों का वाचन कर सभी विद्वानों ने विनयांजली भी प्रक्षेपित कर दी.

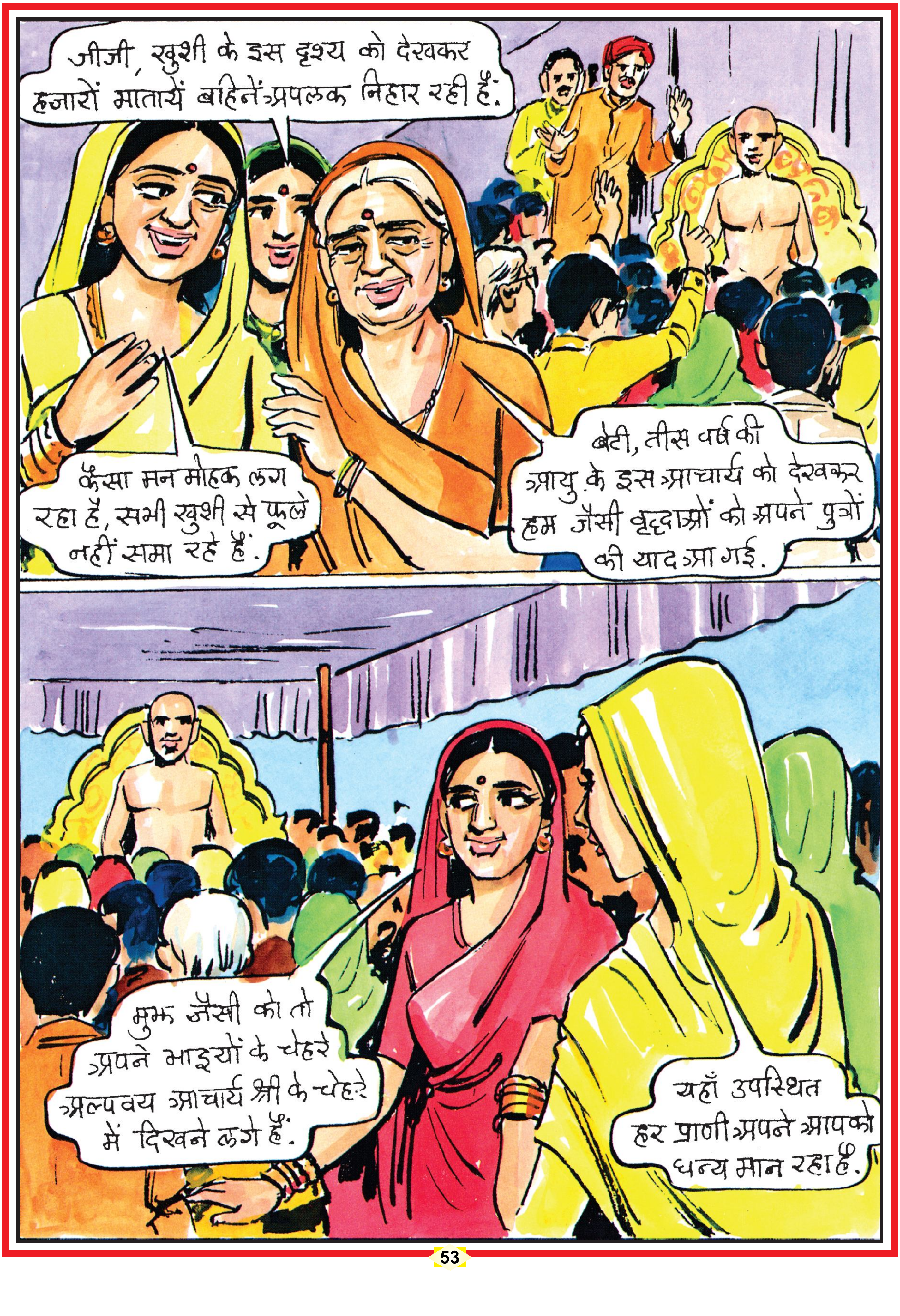
जीजी, खुशी के इस दृश्य को देखकर हजारों मातायें बाहिनें अपलक निहार रही हैं.
कैसा मन मोहक लग रहा है, सभी खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं.
बेटी, तीस वर्ष की आयु के इस आचार्य को देखकर हम जैसी वृद्धाओं को अपने पुत्रों की याद आ गई.
मुझ जैसी को तो अपने भाइयों के चेहरे अल्पवय आचार्य श्री के चेहरे में दिखने लगे हैं.
यहाँ उपस्थित हर प्राणी अपने आपको धन्य मान रहा है.

धर्म बन्धुओं, आज द्रोणगिरि की पवित्र धरती ने महान देश भारत वर्ष को एक युवा आचार्य प्रदान किया है.
यह घटना इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में लिखी जावेगी. आज साधु परम्परा समृद्ध हुई है.
बोलो परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की जय.
द्रोणगिरि की धरती पर जैन अध्याता और जैन साहित्य को स्तंभ बनकर संभालने वाले एक महान आचार्य का प्रादुर्भाव हुआ है.
धर्म प्रेमियों! परम पूज्य आचार्य विराग सागर जी आज से बुन्देलखण्ड की वीर प्रसविनी माटी के प्रथमाचार्य नाम से जाने जायेंगे.
सारा वातावरण आचार्य श्री की जयकार से गूँज रहा है.

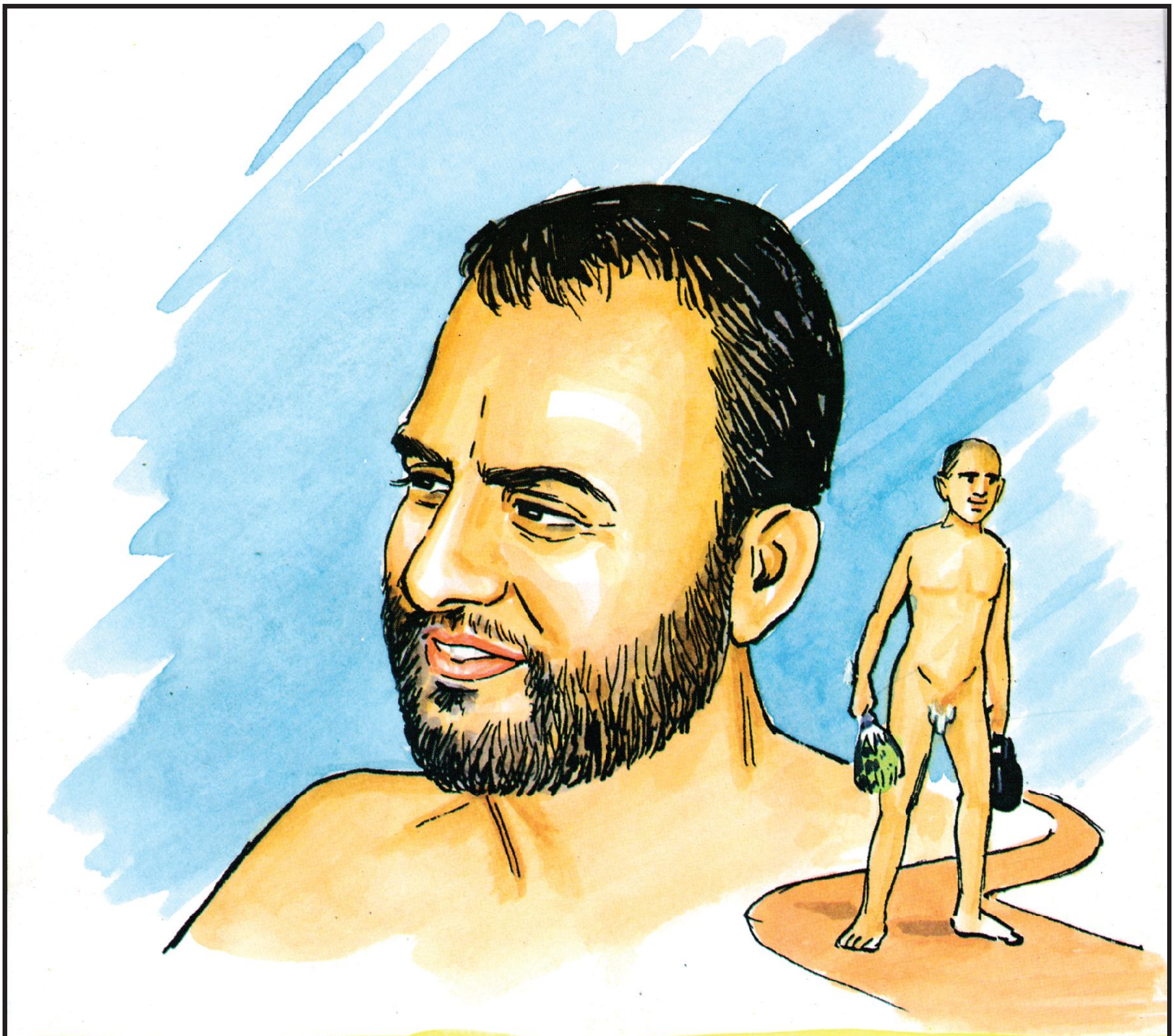

आचार्य पद से अलंकृत होने के पश्चात श्रेयांसगिरि, बीना, ललितपुर जबलपुर आदि अनेक स्थानों पर चातुर्मास कर ज्ञान वैराग्य और विराग की अजस्त्र धारा बहाते हुए सन २००१ में आचार्य श्री विराग सागर जी का ससंघ गया (बिहार) में चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ.

आचार्य श्री का आत्मशोधन, आत्ममनन, चिन्तन की विचारधारा से 'सम्यग्दर्शन' शुद्धोपयोग जैसी कृतियों का सृजन हुआ, जिनको आत्मसात कर अनेक पिपासु आत्म अनुभव के रसास्वादन द्वारा अपना जीवन सार्थक कर आत्म उद्धार कर रहे हैं.

ऐसे बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के चरणों में चैतन्य की ज्योति जलाने हेतु 'ज्योति' का कोटि-कोटि प्रणाम। नमोऽस्तु.

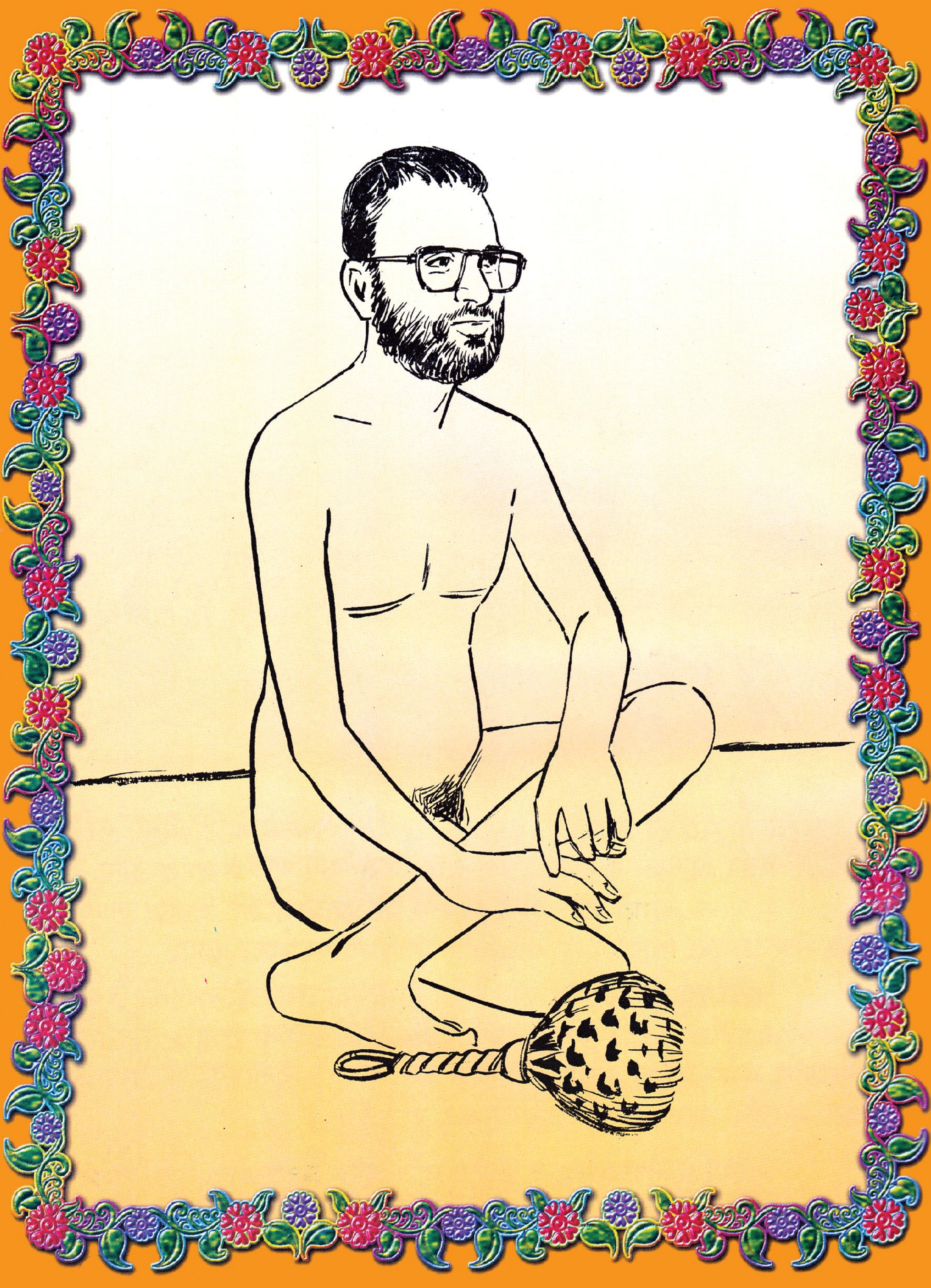

एक दृष्टि

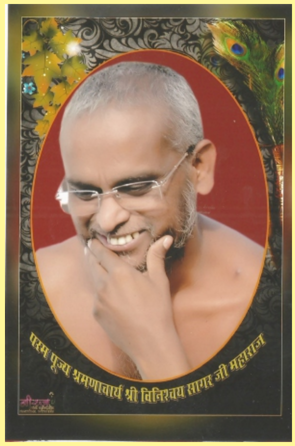

पट्ट प्रवचनकार, स्वाध्याय प्रेमी, ज्ञान-ध्यान में निरत, सौम्यमूर्ति, परम पूज्य वाक्केशरी श्रमणाचार्य श्री 108 विनिश्चय सागर जी महाराज, संत शिरोमणि, बुन्देलखण्ड के प्रथम दिगम्बराचार्य, साधना के धनी, बहुश्रुत ज्ञाता, आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के परम प्रिय युवा शिष्यों में से एक हैं।

26 जून, 1973 को मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पथरिया ग्राम में जन्मे पिताश्री रमेशचन्द, माता श्रीमती कुसुम देवी जैन के सुपुत्र अरुण कुमार ने 22 वर्ष की अल्पायु में ही गृह त्याग तीसरी प्रतिमा धारणकर, 23 वर्ष की अल्पायु में देवेन्द्रनगर, पन्ना (म.प्र.) में ऐलक दीक्षा ग्रहण कर 14 दिसम्बर, 1998 बरासों अतिशय क्षेत्र भिण्ड में गुरुवर आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ग्रहण की, सांसारिक उपक्रमों में मौन, कुशल अन्वेषक, ज्ञान-विराग के प्रशस्त पथानुगामी, आत्मिक यात्रा के मार्ग पर अबाधगति से अग्रसर होने वाले ऐसे विलक्षण युवा दिगम्बर संत हैं, जिनके अन्तस्तल में श्रद्धा, ज्ञान, चारित्र की त्रिवेणी प्रवाहित है।

धर्मरूप वीतराग वाणी का निस्पंदन करने वाली आपकी सहज और सुबोध वाणी में ऐसी ओजस्विता है कि प्राणी मात्र आपके पास स्वतः ही खिंचा चला आता है। आपके आचरण और व्यवहार में जैसी वात्सल्यता झलकती है ठीक वैसी ही धर्म गंगा आपके धारा प्रवाह प्रवचन में अनवरत रूप से प्रवाहित होती है।

आपकी तत्वान्वेषी दृष्टि और चिन्तन की सृजनशीलता से प्रादुर्भूत- संवेदना, बढ़ते कदम, मन की तरंगें, आँखों का फेर, माँ के आँचल से, यदि तुम वृद्ध हो तो अर्धमृतक हो, आदर्श जीवन, जैन जगत के वरद् सरस्वती पुत्रों और मूर्धन्य मनीषियों द्वारा मुक्तकंठ से सराही गयी हैं इसके साथ ही गुरुवर के द्वारा की गयी साहित्य सृजन में जैन तत्व मनीषा, वाग्मीवाणी, विनिश्चयागमोदय ग्रंथ, विद्वानों द्वारा स्तुत्य हैं। आपकी सद्प्रेरणा से ही श्रमण सेवा समिति का उदय हुआ तथा निःशक्त विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति प्रदान कर अध्ययन में सम्बलता प्रदान करने हेतु आपका मंगल आशीर्वाद फलीभूत हुआ। सरस्वती के उपासक, जिन शास्त्रों के गहन अध्येयता मनीषियों की अनवरत साहित्य सेवा को आदर प्रदान करने हेतु प्रतिवर्ष आचार्य विरागसागर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करने के प्रेरणास्रोत आप ही हैं।

आज अपनी देशना से जन-जन के हृदय में धर्म और धर्मी के प्रति बहुमान की भावना उत्पन्न कर अपने गुरु की महिमा व गौरव को वृद्धिगंत कर श्रमण भाव को जगा रहे हैं।

लेखिका परिचय

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी वि.सं. 2017 को इटावा (उ.प्र.) जिले के जसवन्त नगर के धार्मिक परिवार में जन्मी पिताश्री अमरनाथ और माता श्रीमती धनवन्ती जैन की तृतीय पुत्री व सेठ श्री लखमीचन्द्र एवं श्रीमती पूनाबाई जैन गुढ़ा ललितपुर (उ.प्र.) की तृतीय पुत्रवधू एवं विद्वद्वर्य प्रतिष्ठाचार्य, वाणी भूषण डॉ. विमलकुमार जैन, जयपुर की सहधर्मिणी एकांकीकार श्रीमती माधुरी जैन ज्योति एम.ए. (हिन्दी, अर्थशास्त्र) , बी.एड. हैं। समाज द्वारा महिला रत्न, सरस्वती पुत्री, मातृत्व शक्ति सम्पन्न, नारी गौरव, सत्पथ प्रदर्शिका, पट्टु प्रवचनकार आदि उपाधियों से आपको विभूषित किया गया है।

कार्य : सम्प्रति शिक्षिका पद पर कार्यरत रहते हुए सामाजिक व धार्मिक कार्यों से समाज को अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। कृतित्व - कुल का दीपक, मैं जीत गई, तिरस्कार, कौन समय से जीता, ज्ञानसागर की कहानी चित्रों की जुबानी मौलिक तथा नारी चेतना का जागरण, किरण, जैन भजन एवं पूजन संग्रह, मन की तरंगें आपकी सम्पादित कृतियाँ हैं। कहानी, कविता, एकांकियों का विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठियों में शोधलेखों का वाचन आपकी विशेषता है। शताधिक एकांकियों का लेखन तथा विभिन्न नगरों में सफलतापूर्वक मंचन।

पुरस्कार : आचार्य विरागसागर राष्ट्रीय पुरस्कार, श्रुतसंवर्धन संस्थान मेरठ द्वारा प्रदत्त मुनि वर्धमानसागर स्मृति पुरस्कार, अणुव्रत पुरस्कार, अंकलीकर पुरस्कार से सम्मानित।

अभिरुचि : लेखन, प्रवचन, संपादन, मंच निर्देशन व संचालन, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक।

विशेषताएँ : अत्यन्त सरल, सुबोध शैली में प्रवचन, एकांकी नाटक मंचन, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र मे कार्य।

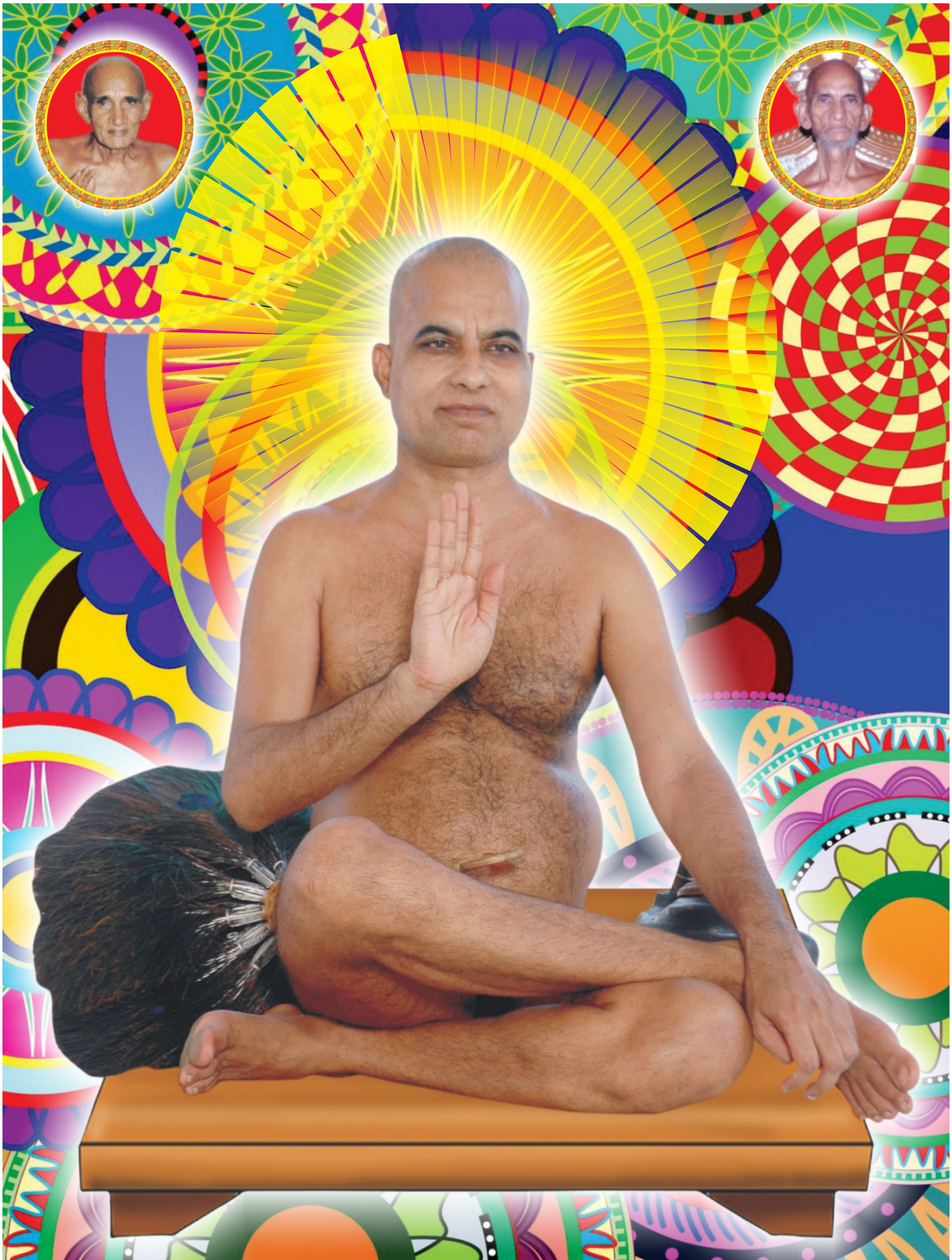

परम पूज्य राष्ट्रसंत, युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज